रूसी लोक कथाएँ

(भाग दूसरा)

सम्पादक

श्यामू संन्यासी

प्राप्ति स्थान

हिन्दी ज्ञान मन्दिर लिमिटेड,

रुस्तम बिल्डिङ्ग, चर्चगेट स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

प्रथम संस्करण १९४८]

[कीमत सवा रुपया

प्रकाशक—
भानुकुमार जैन,
हिन्दी ज्ञान मन्दिर लिमिटेड,
इन्दौर शाखा
आड़ाबाजार, इन्दौर शहर

मुद्रक
सीताराम भराणी
पीपुल्स प्रिंटिङ्ग प्रेस
७४, सियागंज, महारानी रोड,
इन्दौर शहर

विषय-सूची

१ आलसी हको १
२ सेनापति सफर ६
३ मालिक और नौकर १७
४ अनैत रानी और बचगान राजा २३
५ खटमल और पिस्सू ३८
६ भेड़िया और लोमड़ी ५१
७ दयालु उमर ५८
८ सुनहरा मच्छ ६६
९ तीन तिलिस्म ७६

शुद्धि--पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	२०	लमा	लगा
१६	६	उस हाथ से	दूसरे हाथ से
२७	३	सगत भेजी है	सौगात भेजी है
३१	८	चाराह	चौराहे
४७	२५	रें भाई	रँभाई
५२	१३, १४	जी, जा	जी, उठ
५२	२५	में	मैं
५३	१	और	मेरे
५७	१	वोह	नोह
५८	शीर्षक में	दयालू	दयालु
६१	१३	ठोके	ढोके
६५	६	बैंठों	बैठो
६६	२२	दर्बो	हर्बो
६७	१५	पापी नगैना	पापिन गैना
६८	१	घूसकर	कूदकर
६८	६	पर कोठे	परकोटे
७३	७	डाढ़ें	धाड़ें
७४	१४	आदि	आदी

आलसी हेको

यह तो मालूम नहीं कि कब और कहाँ, परन्तु एक समय की बात है कि कहीं एक आदमी रहता था। उसका नाम हेको था। वह बड़ा ही कामचोर था। इसलिए सब उसे सुस्तराम कहकर पुकारते थे। अपनी इस आदत के कारण उसे भूखा मरना पड़ता था।

जब वह भूखा मरने से तंग आ गया तो उसने गरबातू के पास जाने का इरादा किया। गरबातू बूढ़ा और समझदार आदमी था। वह लोगों की तक़दीर तक बदल दिया करता था।

हेको घर से निकला और लम्बी यात्रा के बाद गरबातू के रहने की जगह पहुँचा। टोपी उतारकर हेको गरबातू के घर के दरवाजे में अदब से खड़ा हो गया। उसे देखकर गरबातू ने पूछा—अरे, यह तो सुस्तराम हेको है! कहो जी, तुम तो अभी तक जिन्दा हो? मैंने तो सोचा था कि मारे आलस्य के तुम कभी के परम-धाम पहुँच गये होगे।

जी नहीं, बन्दा अभी तक सही-सलामत खड़ा है।' हेको ने जवाब दिया।

'कहिये, आपने यहाँ तक आने की तकलीफ़ क्यों की?'

'मैं अपनी तक़दीर बदलवाने आया हूँ। अब भूखा मरना मेरे बस का नहीं रहा।'

गरबातू ने अपनी घनी भौंहों के नीचे से उसे घूरकर देखा और फिर बोला—मालूम होता है तुम यह कहावत भूल गये हो कि जो जैसा बोवेगा, वैसा ही काटेगा। तुम काम नहीं करोगे तो तुम्हारी तक़दीर में भूखा मरना ही लिखा है। विधाता का भी यही विधान है।

'लेकिन मैं भूखा मरना नहीं चाहता। बिना हाथ पाँव हिलाये ही माल मलीदा उड़ाना चाहता हूँ।'

'यह तुम्हारी हिमाक़त है। मीठा फल चाहते हो तो उसके लिए मेहनत करना ही होगी। लेकिन तुम हो कि टाँगें फैलाये आसमान के कौए गिना करते हो और चाहते हो कि खाना मुँह में आ टपके।'

लेकिन हेको ने एक न सुनी। वह उसी तरह दरवाज़े में अपनी टोपी लिये खड़ा रहा और अपनी बात दुहराता रहा।

अन्त में गरबातू को गुस्सा आ गया। वह बोला—

'अच्छी बात है। तुम हो तो निकम्मे फिर भी मैं तुम्हें वरदान देता हूँ। जाओ, तुम्हारी मनशा पूरी होगी। घर लौट जाओ। छुट्टियों तक इन्तज़ार करो। छुट्टी के एक दिन पहले ज़ोर का तूफ़ान उठेगा। तुम सोना मत। जागते रहना। आकाश में बिजली चमकते ही तुम्हारी पहली इच्छा पूरी होगी। दूसरी बार बिजली चमकने पर, दूसरी और तीसरी बार बिजली चमकने पर तीसरी इच्छा पूरी होगी। लेकिन तुम इतने बेवक़ूफ़ हो कि कोई अच्छी बात चाहोगे ही नहीं और मेरे वरदान से तुम्हारा कोई फ़ायदा नहीं होगा।'

हेको ने गरबातू को धन्यवाद दिया और उससे बिदा होकर अपने घर लौट आया।

छुट्टी के एक दिन पहले हेको अपने घर के दरवाज़े पर बैठकर तूफ़ान का इन्तज़ार करने लगा। उसकी आँखों में नींद घिर रही थी परन्तु वह आँखें मलकर और जम्हाइयाँ लेकर किसी तरह जागता रहा।

धीरे धीरे आसमान में बादल छा गये। ज़ोरों की हवा चलने लगी। धरती पर पानी की बड़ी-बड़ी बूँदें गिरने लगीं। हेको बैठा बादल कड़कने और बिजली चमकने का इन्तज़ार करने लगा।

उसने मन ही मन सोचा कि कौनसी अभिलाषा करनी चाहिये। लेकिन तभी अचानक उसके पेट में इतने ज़ोर का दर्द उठा कि वह सब कुछ भूल गया।

उसने खीझ कर कहा—इस पेट का नाश हो जाय इसका, क्या बेमौक़े दर्द उठा है!

तभी ज़ोर से बादल कड़के, बिजली चमकी और हेको का पेट नदारद हो गया।

उसने कोट के अन्दर हाथ डालकर देखा। पेट का कहीं पता ही नहीं था। पेट की चमड़ी पीठ से जा लगी थी। यह देख हेको मारे डर के फूट-फूटकर रोने लगा।

'हाय-हाय, अब मैं क्या करूं? बिना पेट के कैसे जीयूँ? भगवान करे और मेरा पेट ढोल जैसा हो जाय।'

हेको के मुँह से बात निकलने की देर थी। फिर बिजली चमकी और उसका पेट बढ़कर ढोल के बराबर हो गया। अब खड़ा होना तो दूर वह पेट के वज़न के मारे उठकर बैठ भी नहीं सकता था। चारों खाने चित्त पड़कर वह हायतोबा

मचाने लगा—हाय-हाय, यह ढोल-सा पेट लेकर मैं कैसे जीयूँ ? भगवान करे और मेरा पेट पहिले जैसा ही हो जाय।

फिर बादल कड़के, बिजली चमकी और हेको का पेट पहले जैसा हो गया।

अब तो सुस्तराम को बड़ा ही गुस्सा आया। अपने तक़दीर पर बकझककर उसने फिरसे गरबातू के घर का रास्ता पकड़ा। रास्ते में उसे एक भेड़िया मिला। वह बहुत ही बूढ़ा, कमज़ोर और बदशकल था। उसकी हड्डियाँ तक निकल आई थीं। भेड़िये ने हेको का रास्ता रोककर उससे पूछा—क्यों हेको भाई, कहाँ भागे जा रहे हो ?

भेड़िये को देख हेको का मारे डर के दम ही निकल गया। काँपता-काँपता बोला—राम-राम बड़े भाई ! मैं गरबातू के पास अपने दुर्भाग्य की शिकायत करने जा रहा हूँ।

'गरबातू कौन है ?'

'एक बड़ा ही जानकार आदमी है। लोगों की तक़दीर तक बदल देता है।'

यह सुन भेड़िया बोला—हेको भाई, मेरा भी एक काम कर देना। तुम्हारा बड़ा उपकार मानूँगा। मैं दिनों-दिन दुबला होता जारहा हूँ। खाने को भी भरपेट नहीं मिलता। ज़रा पूछते आना मैं क्या करूँ ? देखना, भूलना मत; नहीं तो तुम्हें खा जाऊँगा।

'अच्छा भेड़िया दादा, नहीं भूलूँगा। ज़रूर पूछता आऊँगा।' यह कहकर हेको आगे दौड़ चला।

दौड़ते दौड़ते उसके पाँव थक गये। वह एक सेव के पेड़ के नीचे विश्राम करने के लिए रुका। पेड़ पर खूब सारे फल

लग रहे थे। उसने ऊपर चढ़कर एक पका हुआ फल तोड़ लिया। लेकिन फल में मुँह लगाते ही वह चिल्ला उठा—बाप रे बाप ! यह सेव है या खट्टा नीबू ! उसने मुँह बिगाड़कर सेव का फल फेंक दिया।

यह देख सेव के पेड़ ने उदास होकर अपनी टहनियाँ हिलाईं और हरी पत्तियों से आँसू गिरने लगे और वह बोला—

'हेको भाई, देख लिया न मेरा दुर्भाग्य ! जो मेरा फल खाता है इसी तरह मुझे कोसता है। मैं थके मुसाफ़िरों की सेवा करना चाहता हूँ, लेकिन मेरी तक़दीर ही खोटी है। मेहरबानी कर मुझे मेरी इस बीमारी से मुक्ति दिलाओ।

'अच्छी बात है। गरबातू से मेरी भेंट होने दो। तुम्हारे बारे में भी पूछ लूँगा। यह कहकर हेको आगे बढ़ गया।

दौड़ते-दौड़ते उसकी साँस भर आई और दम फूल गया। लेकिन गरबातू का घर अब भी काफी दूर था। हेको को ज़ोरों की प्यास लगी। पास ही जंगल में उसे एक सोता दिखाई दिया। वह दौड़कर सोते के किनारे पहुँचा। घुटनों के बल बैठकर उसने पानी में हाथ डाला ही था कि उसे सोते की पेंदी में एक बड़ी मछली दिखलाई दी। मछली का मुँह खुला हुआ था। आँखें बाहर को निकली पड़ती थीं। वह ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रही थी। और अपना मुँह बन्द नहीं कर सकती थी।

हेको को देखकर मछली खुशी से नाच उठी और बोली—हेको भाई, भगवान तुम्हारा भला करे, ज़रा मेरी भी मदद करो। बीस साल से इसी तरह मुँह फाड़े पड़ी हूँ। मुँह बन्द ही नहीं होता।

'थोड़ा और ठहरी रहो। शायद गरबातू कोई तरकीब सुझादें'। और वह आगे बढ़ गया।

जब वह गरबातू के घर पहुँचा तो बूढ़ा अपने दरवाज़े पर बैठा भौंहें सिकोड़े एक बड़ी-सी किताब पढ़ रहा था। हेको को देखकर गरबातू ने पूछा—'मेरे पास क्यों आये हो ?'

'तुम्हारे पास न आता तो कहाँ जाता ? तुमने मेरी हँसी क्यों उड़ाई ? पहले तो तुमने मुझे मेरी तीन अभिलाषाएँ पूरी करने का वरदान दिया और फिर ऐन मौक़े पर बीमार कर दिया। कुछ देना था तो यों ही दे देते; मुझ गरीब को हैरान करने की क्या ज़रूरत थी ?'

'बिना हाथ-पाँव हिलाये मलीदा खाने की तुम्हारी अभिलाषा अब भी बनी है ? अच्छी बात है। एक बार फिर मैं तुम्हें धन दूँगा। लेकिन तुम उसका कोई उपयोग नहीं कर सकोगे।'

हेको गिड़गिड़ाया—ऐसा मत कीजिये, इस बार मैं ज़्यादा समझदारी से काम लूँगा।

'अच्छी बात है। यह तो बतलाओ कि यहाँ आते समय रास्ते में तुम्हारी किसी से भेंट हुई थी ?' गरबातू ने मुस्कराकर पूछा।

हेको ने प्रसन्न होकर कहा—'हाँ, हुई तो थी। रास्ते में मुझे एक बड़ी-सी मछली मिली थी। वह सोते के अन्दर मुँह फाड़े पड़ी थी। बीस साल होने आये उसका मुँह बन्द ही नहीं होता। यह तो बतलाइये कि वह इस बीमारी से कैसे मुक्त हो ?

'एक हीरा उसके गले में अटका हुआ है। हीरा निकालते ही मछली का मुँह बन्द हो जायगा। अच्छा, और तुमने क्या देखा ?'

'मैंने सेब का एक पेड़ देखा। उसपर बड़े-बड़े सेब लगे हैं। लेकिन चखो तो नीबू की तरह खट्टे लगते हैं। वे सेब मीठे कैसे हो सकते हैं ?'

'सेब के पेड़ के नीचे सोना गड़ा है। उसे खोदकर निकाल लिया जाय तो सेब के फल अंजीर की तरह मीठे हो जायेंगे। अच्छा, अब तुम जाओ। मैं थक गया हूँ।'

लेकिन हेको बोलता ही गया—रास्ते में मुझे एक बूढ़ा भेड़िया भी मिला। वह कितना ही क्यों न खाये पर दिनों-दिन दुबला ही होता जाता है। उसने पुछवाया है कि उसकी यह बीमारी कैसे मिट सकती है ?'

गरबातू कुटिलतापूर्वक मुस्कराया और उसने ज़ोर से अपनी किताब बन्द कर दी और बोला—मैं तुमसे ऊब गया हूँ। भेड़िया से कहना कि उसकी बीमारी की दवा दुनिया का सबसे मूर्ख और आलसी जीव है। भेड़िया उसे खाते ही अच्छा हो जायगा।

गरबातू से विदा होकर हेको घर की ओर चला। सोते के पास पहुँचने पर मछली ने उससे पूछा—क्यों भैया, गरबातू ने मेरे बारे में क्या कहा ?

'उसने कहा कि तुम्हारे गले में हीरा अटका हुआ है। हीरा निकालते ही मुँह बन्द हो जायगा।

मछली बोली—तो भैया, हीरा निकाल लो और तुम्हीं उसे रख भी लो।

लेकिन हेको ने अकड़कर कहा—मैं अपने हाथ गन्दे क्यों करूँ ? गरबातू ने मुझे बहुत-सा धन देने का वादा किया है। वह तो मुझे मिलेगा ही, फिर मैं तुम्हारे साथ परेशान क्यों हूँ ? और वह आगे बढ़ गया।

सेब के पेड़ ने उसे आते देखकर पूछा—क्यों भाई, गरबातू ने तुमसे क्या कहा ?

'गरबातू ने कहा कि तुम्हारी जड़ों में से सोना खोदकर निकाल लिया जाय तो तुम्हारे फल अञ्जीर की तरह मीठे हो जाएँगे ।'

सेब का पेड़ बोला—तो भैया, मेरी बीमारी दूर कर दो और वह सोना तुम्हीं ले जाओ ।

हेको ने नाक सिकोड़कर कहा—वाहजी, मैं अपने हाथ क्यों दुखाऊँ ! गरबातू वैसे ही मुझे बहुत-सा धन देनेवाला है ।

और सेबको खट्टा ही छोड़कर हेको आगे बढ़ गया ।

चलता-चलता वह वहाँ पहुँचा जहाँ भेड़िया रास्ते के बीच में लेटा हेको का रास्ता देख रहा था । उसकी थूथन उसके पञ्जोंपर रखी हुई थी ।

'क्यों हेको, तुमने गरबातू से मेरी बीमारी का इलाज पूछा या नहीं ? जल्दी बतलाओ नहीं तो खा जाऊँगा ।'

हेको को लाचार होकर भेड़िये के पास बैठना पड़ा । उसने उसे मछली, और सेब के पेड़ की कहानी भी कह सुनाई ।

यह सुन भेड़िया बोला—तो गरबातू ने यह कहा है कि मेरी बीमारी का इलाज दुनिया का सबसे मूर्ख और आलसी प्राणी है ? उसे खाते ही मैं अच्छा हो जाऊँगा ? क्यों, यही कहा है न ?

'हाँ, हेको ने जवाब दिया ।'

भेड़िये ने जम्हाई ली और पँजे फैलाकर बोला—तो तुम्हारी आखरी घड़ी आ पहुँची है ।

इतना कहकर भेड़िये ने हेको को दबोच लिया और फाड़कर खा गया ।

इस तरह वह आलसी हेको अपनी मूर्खता से आप ही मौत का शिकार हुआ ।

सेनापति सफर

उस पागल कुत्ते गोत्सिन्स्की के सिपाहियों को खूँज़ाख़ के क़िले के चारों ओर घेरा डाले चालीस दिन और चालीस रातें हो गई थीं । इसकी खबर नदी-नाले, जंगल-मैदान और बर्फ़ से ढँके पहाड़ों को पार करती हुई लाल सेना के सदर मुक़ाम पर पहुँची । उस समय लाल फौज़ के सदर मुक़ाम का सेनापति सफर नामक एक बड़ा ही बहादुर अश्वपाल (जिगित) था । उसने अपने सिपाहियों को बुलाकर कहा—उन गन्दे कुत्तों ने खूँज़ाख़ के लाल क़िले पर घेरा डाल रखा है । चलो, हम चलकर अपना क़िला छुड़ायें ।

सफर के सिपाहियों ने एक आवाज़ में कहा—हाँ, सफर, चलो चलें ।

अपने सिपाहियों को साथ लेकर सफर खूँज़ाख़ की ओर चल दिया । वह सब के आगे था । ऊँचे-ऊँचे पर्वत, बीहड़ जंगल और गहरी नदियाँ पार करते हुए वे सिपाही बिना रुके चलते गये । सफर अपने घोड़े पर से उतर पड़ा और उसे सामान लादने के लिए दे दिया । उसने अपने सिपाहियों से कहा—मैं भी तुम्हारी ही तरह तुम्हारे साथ पैदल चलूँगा ।

और सफर और उसके सैनिक दो दिन और दो रात तक बिना रुके चलते रहे ।

पहाड़ी लोग जानते थे कि सफर गरीबों का रक्षक है और उनकी मदद के लिए लड़ता है। इसलिए पिताओं ने अपने बेटे, पत्नियों ने अपने पति और बहिनों ने अपने भाई सफर की सेना में भर्ती होने के लिए भेजे। पहाड़ी लोग नज़मुद्दीन गोत्सिन्स्की के इरादों को अच्छी तरह से जानते थे। गरीब किसानों ने उससे चरागाह, भेड़ें, खेत और बगीचे छीन लिये थे और वह अत्याचारी भाड़े के सैनिकों की मदद से किसानों को हटा कर उनकी जमीन और जानवर फिर से अपने कब्जे में करना चाहता था। उसके हुक्म से उसके सिपाही जनता को लूटकर नज़मुद्दीन का खज़ाना भर रहे थे। जनता के दुश्मन किसानों की बखारों से रहा-सहा अनाज और उनके बचे-खुचे गधे तक लूटकर ले गये थे। किसान तबाह हो गये थे। इसलिए बदला लेने के लिए किसानों ने भी लड़ाई की तैयारियाँ शुरू कर दीं।

जैसे ही गाँव वालों को पता लगा कि सफर अपनी सेना सहित पहाड़ी इलाक़े में आ गया है, झुण्ड के झुण्ड लोग उसकी सेना में भर्ती होने के लिए आने लगे। और तीसरे दिन सफर ने अपनी सेना को एक बड़ी सी घाटी में रुकने का हुक्म दिया।

सेना ने वहीं पड़ाव किया। घोड़ों की पीठ से कारतूसों की पेटियाँ, और दूसरी ज़रूरी रसद उतारी गई। पहरे पर सैनिक तैनात किये गये और खाने-पीने की तैयारियाँ होने लगीं।

जब रात हो गई तो सफर ने सिपाहियों को सोने का हुक्म दिया। पहरेदारों की पालियाँ बाँध दी गई और सफर ने खुद चौकियों का मुआयना (निरीक्षण) किया। उसने सारे पड़ाव का चक्कर लगाया। सब कहीं शान्ति थी। घाटी के चारों ओर ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ थीं, जिनकी चोटियाँ आसमान तक चली

गई थीं। ऊपर आसमान का नीला चन्दोवा तना था। घाटी से निकलने के दो रास्ते थे। एक रास्ता दूसरे की अपेक्षा ज्यादा सँकरा था। सफर ने मन ही मन सोचा—अगर दुश्मन ने घाटी के दोनों रास्ते रोक दिये तो हम क्या करेंगे? चूहेदानी से हम बाहर कैसे निकलेंगे?

रोन (राऊण्ड) से लौटकर सफर अपने सेनापतियों के साथ सलाह करने लगा। उधर इस बीच में गोत्सिन्स्की के सैनिकों ने सफर के पड़ाव को घेर लिया। घाटी से बाहर निकलने के रास्ते रोक कर वे ऊँचाई पर चढ़ गये। उन्होंने वहाँ से चिल्लाकर कहा—ए सफर, आत्मसमर्पण कर दे। तू चूहेदानी में फँस गया है। यहाँ से निकल कर जा नहीं सकेगा। हमने सब रास्ते सीसे से बन्द कर दिये हैं।

यह सुनकर सफर खड़ा होगया। वह गरज कर बोला—तुम झूठ बोलते हो। हम अराकान के दर्रे से बाहर निकलेंगे। बढ़ चलो, छापेमारो!

सफर के गरजते ही ऊपर से चट्टानें गिरने और गोलियाँ बरसने लगीं। जो सोये थे वे जाग गये और जो लेटे थे वे हड़बड़ाकर उठ बैठे। घुड़सवार घोड़ों पर चढ़कर दर्रे की ओर लपके। लेकिन गोले और गोलियों की बौछार ने उनका रास्ता रोक दिया। वे मुड़कर दूसरे दर्रे की ओर बढ़े। उधर से भी गोले और गोलियों की बौछार आई। कई आदमी मारे गये। सफर और उसकी सेना चूहेदानी में घिर गई थी। अब वे क्या करते? सब लोग घाटी के बीचों बीच इकट्ठा हो गये और उपाय सोचने लगे। ऊपर से पत्थर के बड़े-बड़े ढोंके और चट्टानें उन पर गिराई जा रही थीं, जिसकी चोट से घुड़सवारों, घोड़ों और पैदल सैनिकों का कचूमर निकला जा रहा था। घोड़े जान

बचाने के लिए काँपते हुए बेतहाशा इधर-उधर भाग रहे थे। लेकिन ऊपर से गिरने वाली चट्टानों से बचना मुश्किल हो रहा था।

सफर ने कहा—हम दुश्मन की पाँतों को चीरकर निकल जायेंगे। छापेमार बहादुरो, मेरे पीछे बढ़ चलो!

और वह सबसे आगे चला। लेकिन रात के अंधेरे में दुश्मन के सैनिक दिखाई नहीं दे रहे थे और सफर के कई सिपाहियों को ज़िन्दगी से हाथ धोना पड़ा।

दुश्मन ने ऊपर से चिल्लाकर कहा—सफर, आत्मसमर्पण कर दो, क्योंकि बचकर निकलना असम्भव है।

यह सफर और उसके बहादुर सैनिकों का बड़े से बड़ा अपमान था, लेकिन सफर कुछ नहीं बोला। उसने मन ही मन सोचा—अब क्या करना चाहिये?

दुश्मन ने चिल्लाकर कहा—हथियार डाल दो। तुम बच नहीं सकते। चूहे होते तो बिल की राह निकल भागते और बाज होते तो आसमान में उड़कर चले जाते; लेकिन तुम नहीं बच सकते।

सफर ने एक बार फिर दुश्मन की पाँतों को चीरकर दर्रे की राह बाहर निकलने का इरादा किया।

वह अपने सैनिकों से बोला—छापेमारो, तुमने उनकी बकवास सुन ली है न?

और उसके आदमियों ने एक आवाज़ में जवाब दिया—हाँ, हमने सुन लिया है।

'हम न तो चूहे हैं और न बाज। बल्कि हम लाल सैनिक हैं। क्या हमारा इस घाटी से निकलना असम्भव है? हर्गिज़ नहीं। बढ़े चलो, जवानो।'

सफर के सिपाहियों ने बाहर निकलने के लिए एक बार फिर आखरी हल्ला बोला; लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। दुश्मन की गोलियों ने उन्हें मौत के घाट उतार दिया। दुश्मन के सिपाहियों ने सब रास्ते रोक लिये थे।

घायल घोड़े लगामें तोड़कर दर्द से चीखते-चिल्लाते घाटी में दौड़ने लगे। सैनिकों ने गोलियों से बचने के लिए आड़ लेने की बहुत कोशिश की लेकिन छिपने की कोई जगह नहीं थी। सफर के कई सैनिक मारे गये।

दुश्मन ने फिर चिल्लाकर कहा—आत्मसमर्पण कर दो।

सफर के सैनिकों ने कड़ककर कहा—हर्गिज़ नहीं।

चट्टानें और गोलियाँ फिर बरसने लगीं।

सफर ने गरजकर कहा—लाल सेना के क्रान्तिकारी सैनिको, शामिल* के बहादुर सैनिकों का उदाहरण हमारे सामने है। जनता के सिपाही बहादुरी से मरना भी जानते हैं। हिम्मत मत हारना।

इसके बाद बचे हुए सैनिकों ने अपने कोट उतार दिये। बाँहें चढ़ा लीं। सीने खोलकर वे एक पुराना युद्ध गीत गाने लगे।

गोल्लिन्स्की के टुकड़खोर सैनिकों ने उन बहादुर लाल सैनिकों को चारों ओर से घेर लिया। उन थके हुए सिपाहियों पर गोलियाँ दागी जाने लगीं और तलवारें चलने लगीं। वे मुट्ठी भर सिपाही जान हथेली पर लेकर दुश्मन से लड़े और लड़ते-लड़ते काम आये। अपनी पूरी फौज खतम हो जाने पर

---

*१६ वीं सदी का एक वीर सेनानी, जो रूस के निरंकुश शासन के विरुद्ध काकेशस की पहाड़ी जनता को संगठित कर वीरतापूर्वक लड़ा था।

भी सफर ने हथियार नहीं डाले। एक चट्टान के पास खड़ा वह दुश्मन का सामना करता और उन्हें मौत के घाट उतारता रहा। और जब वह बिल्कुल अकेला रह गया तो चट्टान ने धीरे से उसके कान में कहा — तुम घिर गये हो। संभलना।

उसने अपनी पीठ चट्टान के साथ लगा दी।

'वे तुम्हें दाहिनी ओर से पकड़ना चाहते हैं। संभलकर वार करो।'

सफर ने दाहिनी ओर के दुश्मन को मार भगाया लेकिन बाँई ओर भी दुश्मन तैयार था। सफर ने एक चोट में उसका भी काम तमाम कर दिया।

'सफर, हथियार डाल दो। तुम बच नहीं सकते। यदि तुमने आत्मसमर्पण नहीं किया तो हम तुम्हें मार डालेंगे।'

'हिम्मत हो तो पकड़ देखो।'

'झुक जाओ !' चट्टान ने चिल्लाकर कहा।

सफर झुक गया और एक बड़ा-सा ढोका उसके ऊपर से निकल गया। वह चट्टान से टकरा कर सफर के पाँवों के पास आ गिरा।

चट्टान काँप उठी। उसने पूछा—तुम में कितनी ताक़त है?

'बिलकुल तुम्हारे इतनी' सफर ने जवाब दिया।

ठीक उसी समय एक बड़ा-सा ढोका आकर उसकी छाती में लगा।

पर सफर मज़बूती से खड़ा रहा।

दुश्मन ने फिर चिल्लाकर कहा—अब भी आत्मसमर्पण कर दो।

'मरने के बाद भी नहीं।'

'तो हम तुझे जीता ही पकड़ेंगे।'

चट्टान ने अपने बाजू सफर के दोनों ओर फैला दिये और उसे ऊपर से भी ढँक लिया। ऐसा लगता था मानों सफर किसी कन्दरा में जा छिपा हो।

'रुक जाओ ! मैं अभी उसे पकड़ता हूँ।' दुश्मन के सिपाहियों में से एक बोला।

फिर उसने अपनी तलवार म्यान में रखी और ऊँची आवाज़ में बोला—किसी के पास शहद हो तो थोड़ा-सा मुझे देना।

पहाड़ी मधु-मक्खियों का थोड़ा-सा शहद उसे दिया गया। उसने अपने कोट से ऊन का एक छोटा-सा टुकड़ा फाड़ा और उसे शहद में भिगोकर सफर की ओर फेंका। शहद से सना हुआ वह टुकड़ा सफर की घायल छाती पर जाकर चिपक गया। तुरत न जाने कहाँ से मधु-मक्खियों का एक झुण्ड आकर घाव पर बैठ गया और डङ्क मारने लगा। सफर ने ऊन के उस टुकड़े को छाती के घावपर से निकाल कर फेंक दिया। लेकिन तुरत ही एक दूसरा टुकड़ा उसकी आँखों में आकर गिरा और मक्खियाँ भिनभिनाती हुई आँखों से चिपक गईं। सफर ने ज़ोरों से सिर हिलाकर उस टुकड़े को भी नीचे गिरा दिया। उसकी आँखों की ज्योति धुँधली हो गई। उसके बदन में सुइयाँ चुभने लगीं और सूजन आ गई। खुले घावों पर मक्खियाँ मँडराने और डङ्क मारने लगीं।

सफर गुस्से से आगबबूला होकर चिल्लाया—अरे सईसो ! तुम्हारा बस नहीं चला तो अब तुमने मधु-मक्खियाँ मदद के लिए बुला ली हैं। लानत है तुम पर।

शहद का तीसरा फोया तैयार करते हुए दुश्मन ने जवाब दिया—अब भी आत्मसमंपर्ण करता है या नहीं ?

'गीदड़ को बुला लो अपनी मदद के लिए, तब मैं आत्म-समर्पण कर दूँगा।'

दुश्मन ने फिर शहद का फोया सफर पर फैंका। इस बार वह उसके घायल कलेजे पर जाकर गिरा। मक्खियाँ घाव पर बैठकर उसका खून पीने लगीं। सफर के एक हाथ में तलवार थी और वह उस हाथ से मक्खियों को उड़ाने जा ही रहा था कि दुश्मन ने उसे पकड़ लिया।

चट्टान पीछे छूटने लगी।

सफर ने उससे कहा—तुम कहाँ जा रही हो?

चट्टान फिर आगे को झुक आई।

सफ़र ने उसके कान में कहा—गिरफ्तारी से निकलने में मेरी मदद करो।

चट्टान ने जवाब दिया—पर तुम तो दुश्मन के हाथ में हो। अब मैं तुम्हारी मदद कैसे करूँ?

'डटकर खड़ी रहना।' यह कहकर सफ़र ने उसकी नुकीली धार पर अपना सिर पूरी ताक़त के साथ दे मारा।

चट्टान दृढ़ता से खड़ी रही। बहादुर सफर उससे सिर टकरा कर मर गया; पर दुश्मन के हाथ उसने आत्मसमर्पण नहीं किया।

मालिक और नौकर

एक समय की बात है। किसी गाँव में दो भाई रहते थे। उन पर मुसीबत आई और वे गरीब हो गये। खाने के भी लाले पड़ने लगे। तब बड़ा भाई बोला—ए मेरे प्यारे छोटे भाई, तू यहीं रह। मैं धन कमाने के लिए विदेश जाता हूँ। कहीं किसी की मेहनत-मज़दूरी करूँगा और घर पैसा भेजता रहूँगा।

यह कहकर बड़ा भाई घर से निकला। छोटा भाई खेत और जानवरों की देख-भाल के लिए घर ही रहा। बड़ा भाई चलता-चलता बहुत दूर एक दूसरे इलाके में पहुँचा और वहाँ एक मालदार किसान के यहाँ नौकर हो गया।

बड़े भाई ने वहाँ वसन्त ऋतु आने तक नौकरी करने का वादा किया। लेकिन उसके मालिक मालदार किसान ने एक बड़ी ही अजीब शर्त पेश की। वह बोला—अगर वसन्त ऋतु से पहले हममें से कोई गुस्सा हुआ तो उसे एक हज़ार रुपए हर्जाना देना पड़ेगा। अगर तुम गुस्सा हुए तो तुम मुझे एक हज़ार रुपए दोगे और अगर मैं गुस्सा हुआ तो मैं तुम्हें एक हज़ार रुपए दूँगा।

बड़े भाई ने कहा—लेकिन मेरे पास तो इतने रुपए नहीं हैं।

'कोई हर्ज़ नहीं। रुपए नहीं तो न सही। लेकिन शर्त हारने पर तुम मेरे यहाँ दस साल तक मुफ्त काम करोगे।'

पहले तो बड़े भाई ने ना-मंजूर कर दिया, लेकिन फिर उसने सोचा, शर्त मंजूर कर लेना चाहिये। मालिक कुछ भी क्यों न कहे मैं कभी गुस्सा नहीं हूँगा और यदि वह गुस्सा हो गया तो मुझे एक हज़ार रुपए मिलेंगे। और यह सोचकर वह राज़ी हो गया।

दूसरे दिन बड़े सवेरे मालिक ने उसे खेत पर काम करने के लिए भेजा। वह बोला—हँसिया ले जाओ और जब तक उजेला रहे खेत काटो। जाओ, जल्दी जाओ।

बड़ा भाई बेचारा दिन भर खेत में काम करता रहा। शाम को वह थका-माँदा घर लौटा। उसके मालिक ने कहा—तुम लौट क्यों आये?

'लौट क्यों आया? सूरज जो डूब गया है।'

'ऊँहूँ, तुम लौट नहीं सकते! मैंने तुमसे कहा था कि उजेला रहने तक खेत काटना। सूरज डूब गया है लेकिन चाँद उग आया है और चाँद का भी तो उजेला होता है।'

'इसका मतलब तो यह हुआ कि मैं कभी आराम कर ही नहीं सकता।' बड़े भाई ने ज़रा तेज़ होकर कहा।

इस पर मालिक ने कहा—ऐसा लगता है कि तुम गुस्सा हो रहे हो। क्यों?

बड़े भाई ने लड़खड़ाकर कहा—नहीं-नहीं। गुस्सा नहीं हो रहा हूँ। मैं बेहद थक गया हूँ। ज़रा आराम कर लूँ। और वह बेचारा फिर खेत पर चला गया।

चाँद के डूबने तक वह बराबर काम करता रहा। फिर सूरज निकल आया। बड़ा भाई थक कर चूर हो गया था। वह अपने मालिक को कोसने लगा—तुम्हारा खेत, तुम्हारी रोटी और तुम्हारा पैसा सब भाड़ में जाय!

ठीक उसी समय उसका मालिक आ निकला और बोला—

देखो, तुम गुस्सा हो रहे हो। शर्त याद है न? उसके अनुसार या तो एक हज़ार रुपए दो या दस साल तक मेरे यहाँ मुफ्त काम करो।

बड़ा भाई बड़े असमंजस में पड़ गया। उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। उसके पास रुपए तो थे नहीं, और ऐसे आदमी के यहाँ दस साल तक मुफ्त काम करना भी असम्भव ही था।

वह काफी देर तक सोचता रहा। फिर एक हज़ार रुपए का प्रोनोट लिखकर मालिक को दिया और खाली हाथ घर लौट गया।

छोटे भाई ने पूछा—कहो, कैसी गुजरी?

बड़े भाई ने उसे सारा किस्सा कह सुनाया।

छोटा भाई बोला—कोई हर्ज़ नहीं। किसी तरह की चिन्ता मत करो। अब तुम यहीं ठहरो। घर-बार की देख-भाल करो। मैं मज़दूरी करने जाता हूँ।

घर से निकल कर छोटा भाई उसी मालिक के घर पहुँचा। मालिक ने फिर से वे ही शर्तें दुहराईं। यदि नौकर गुस्सा होगा तो या तो एक हज़ार रुपए नक़द देगा या दस साल तक मुफ्त काम करेगा। अगर मालिक गुस्सा होगा तो वह एक हज़ार रुपए नक़द देगा और उसे अज़ाद कर देगा।

छोटा भाई बोला—लेकिन यह तो बहुत थोड़ा है। अगर तुम गुस्सा होगे तो दो हज़ार रुपए दोगे। और मैं गुस्सा हूँगा तो या तो दो हज़ार रुपए दूँगा या बीस साल मुफ्त काम करूँगा।

मालिक ने खुशी-खुशी ये शर्तें मंजूर कर लीं।

इसके बाद छोटा भाई उसके यहाँ मज़दूरी करने लगा।

दूसरे दिन सबेरा हो गया लेकिन छोटा भाई अभी तक पड़ा

खर्राटे ले रहा था। मालिक ने जाकर उसे जगाया और बोला—उठो-उठो। दिन दो पहर चढ़ गया और तुम अभी तक पड़े सो रहे हो।

छोटे भाई ने आँखें खोलते हुए पूछा—लेकिन तुम गुस्सा क्यों हो रहे हो?

'गुस्सा कहाँ हो रहा हूँ? मैं तो यही कह रहा हूँ कि खेत पर जाने और काम करने का वक़्त हो गया है।'

छोटे भाई ने अलसाये हुए स्वर में कहा—अच्छी बात है। सुन लिया। लेकिन अभी तो काफी वक़्त है।

फिर वह उठा और धीरे-धीरे कपड़े पहिनने लगा।

'ज़रा जल्दी करो भाई, इस तरह काम नहीं चलेगा।'

'अच्छा, तो आप गुस्सा हो रहे हैं, क्यों?'

'नहीं-नहीं। मैं तो सिर्फ यह कह रहा हूँ कि तुम्हें देर हो गई है।'

'वह दूसरी बात है। मगर यह याद रखिये कि हमारी शर्त नहीं टूटना चाहिये।'

छोटे भाई ने तैयार होते-होते दुपहर कर दी। फिर अपने मालिक से बोला—क्या इस समय काम पर जाना ठीक होगा? सब कोई खाना खा रहे हैं। हम भी खाना खा लें, तब चलें।

वे खाना खाने बैठे। खा-पीकर छोटे भाई ने कहा—देखो साहब, हम मेहनत-मजूरी करनेवाले लोग हैं। इसलिए खाने के बाद थोड़ी देर लेटना चाहिये। इससे फुर्ती आती है और ताक़त बनी रहती है।

यह कहकर वह घास पर लम्बा हो गया और सूरज अस्त होने तक पड़ा सोता रहा।

'देखो भाई, सुनो! अन्धेरा हो रहा है! सब लोग अपने-अपने खेत काट चुके। अकेला हमारा ही खेत बचा रह गया है।

यह तो बर्दाश्त के बाहर है...।' उसका मालिक उसे जगाने लगा।

छोटे भाई ने उठते हुए कहा—देखिये, आप गुस्सा हो रहे हैं।

'नहीं-नहीं, गुस्सा तो नहीं हो रहा हूँ। मैं तो सिर्फ यह कह रहा हूँ कि अन्धेरा हो गया है और घर चलना चाहिये।'

'अगर यह कह रहे हैं तो अच्छी बात है। चलिये, घर चला जाय।'

घर पहुँचने पर एक मेहमान मालिक का रास्ता देख रहे थे। मालिक ने छोटे भाई को एक भेड़ मारने के लिए भेजा।

छोटे भाई ने पूछा— कौनसी भेड़ मारूँ?

'जो सामने आए मार डालना।'

छोटा भाई चल दिया।

थोड़ी ही देर बाद कुछ पड़ौसियों ने आकर मालिक से कहा—आपका नौकर पागल हो गया है। वह एक के बाद एक आपकी सब भेड़ें मार रहा है।

यह सुन मालिक घबराकर बाहर भागा। उसने बाहर आकर देखा कि छोटे भाई ने सच ही सब की सब भेड़ें मार डाली हैं।

'ए गदहे, तूने यह क्या किया? तेरा नाश जाय तेरा!'

'लेकिन आपने ही तो कहा था कि मैं जो भेड़ सामने आए उसे मार डालूँ। सब भेड़ें सामने आती गईं और मैं उन्हें मारता गया। उसमें मेरा क्या क़सूर है। लेकिन देखता हूँ कि आप गुस्सा हो गये हैं!'

'नहीं-नहीं; मैं गुस्सा नहीं हुआ हूँ! तुमने पूरा रेवड़ ही मार डाला और मुझे इसका अफ़सोस है। और कोई बात नहीं है।'

छोटा भाई इसी तरह उस मालदार किसान के यहाँ कुछ

महीने काम करता रहा और उसने उसे परेशान ही कर डाला। इसलिए मालिक ने उससे पिण्ड छुड़ाने का विचार किया।

तै यह हुआ था कि छोटा भाई वसन्त ऋतु में कोयल के बोलने के बाद काम छोड़ेगा। लेकिन अभी तो जाड़ा ही चल रहा था और वसन्त के आगमन में काफी देर थी। काफी सोच-विचार के बाद मालिक ने छोटे भाई को धोखा देने की तरकीब सोच निकाली।

वह अपनी औरत को जङ्गल में ले गया। उसे एक पेड़ पर बैठा दिया और उससे कोयल के बोलने की नक़ल करने के लिए कह दिया। फिर वह घर लौट आया और छोटे भाई को अपने साथ जङ्गल में शिकार खेलने के लिए चलने को कहा।

जब वे दोनों जङ्गल में पहुँचे तो मालिक की औरत कोयल की तरह 'कू-कू' करने लगी।

मालिक ने कहा—लो भाई, मुबारकबाद। वसन्त ऋतु आ गई है। अब तुम काम छोड़कर जा सकते हो।

लेकिन छोटा भाई मालिक की धोखा-घड़ी को तुरत पहिचान गया।

वह बोला—अच्छी बात है। लेकिन यह कोयल तो बड़ी अनोखी मालूम पड़ती है, जाड़े में भी बोल रही है। मैं इसे मारकर देखूँगा कि यह किस जाति की कोयल है।

यह कहकर उसने उस पेड़ की ओर निशाना साधा जिस पर मालिक की औरत बैठी हुई थी।

अब तो मालिक बड़ा घबराया। उसे बहुत गुस्सा आया। बड़ी मुश्किल से उसे रोकते हुए वह चिल्लाया—तेरा सत्यानाश हो जाय तेरा। तूने तो मुझे पागल ही कर दिया है।

इस पर छोटा भाई बोला—साफ दीख रहा है कि तुम गुस्सा हो गये हो। क्यों है न ?

'हाँ-हाँ; मैं गुस्सा हो गया हूँ। चलो, घर चलें। तुम अपने दो हज़ार रुपए गिनकर मेरा गला छोड़ो। मैं बाज आया तुमसे। दो हज़ार देकर भी तुमसे पीछा छुड़ाने में ही खैरियत है। अब मेरी समझ में आया कि दूसरों के लिए कुआँ खोदने वाला खुद ही उसमें गिरता है।'

और इस तरह छोटा भाई दो हज़ार रुपए लेकर खुशी-खुशी घर लौट गया।
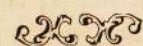
अनैत रानी और वचगान राजा

एक दिन की बात है। राजकुमार वचगान अपने विश्वास-पात्र नौकर वागिनाक के साथ पहाड़ों में शिकार खेलने के लिए गया। दुपहर को वे आतसिक गाँव के पास पहुँचे और नाले के किनारे बैठकर आराम करने लगे। थोड़ी देर में गाँव की लड़कियाँ नाले में पानी भरने आईं। वचगान को जोरों की प्यास लग रही थी। उसने लड़कियों से पीने के लिए पानी माँगा। एक लड़की ने अपना घड़ा भर कर वचगान को पीने के लिए दिया। लेकिन तभी एक दूसरी लड़की ने झपट कर घड़ा उसके हाथ से छीन लिया और पानी ढोल दिया। फिर वह घड़े को भरने लगी और जब घड़ा भर गया तो उसने फिर पानी ढोल दिया। उधर मारे प्यास के वचगान का गला सूख रहा था; लेकिन लड़की पानी भरती और ढोलती जाती थी। छह बार ऐसा करने के बाद उसने सातवीं बार घड़ा भर कर वचगान के हाथ में थमा दिया।

वचगान ने अपनी प्यास बुझाकर लड़की से पूछा—तुमने मुझे पानी पिलाने में इतनी देर क्यों की? क्या तुम मज़ाक कर रही थी या मुझे गुस्सा दिलाना चाहती थी?

लड़की ने जवाब दिया—हम परदेसियों से मज़ाक नहीं करतीं। बात यह थी कि तुम थके हुए थे। तुम्हें पसीना आ रहा था। ऐसे वक्त में ठण्डा पानी पीने से तुम्हारी तबियत खराब हो जाती। इसीलिए मैंने इतना वक्त लगाया; और कोई बात नहीं थी।

राजकुमार ने पूछा—तुम्हारा नाम क्या है?

लड़की ने जवाब दिया—अनैत।

'तुम्हारे पिता कौन हैं और क्या करते हैं?'

'मेरे पिता का नाम अरण है। वह गड़रिये का धन्धा करते हैं। लेकिन यह तो बतलाओ कि तुम हमारा काम-धाम क्यों पूछ रहे हो।'

'वैसे ही। क्या नाम पूछना गुनाह है?'

'यदि गुनाह नहीं है तो तुम भी हमें अपना नाम-पता बतलाओ और यह कहो कि यहाँ क्यों आये हो?'

'झूठ कहूँ या सच कहूँ?'

'जो तुम अपने लिए ठीक समझो वही कहो।'

'सच-सच कहना ही मेरे लिए उचित होगा। लेकिन इस समय मैं सच नहीं कह सकता। मैं वादा करता हूँ कि जल्दी ही मैं तुम पर अपना भेद प्रकट करूँगा।'

'अच्छी बात है। लाओ, अब मेरा घड़ा तो मुझे वापिस कर दो।'

राजकुमार से विदा होकर अनैत अपना घड़ा उठाये घर लौट आई। उधर उन दोनों शिकारियों ने भी अपने घर का रास्ता पकड़ा।

[२]

उसी घड़ी से राजकुमार वचगान सुन्दरी और समझदार अनैत पर मोहित हो गया। उसने उसके साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की। यह सुन राजा और रानी बहुत नाराज़ हुए। एक राजकुमार गड़रिये की लड़की से शादी करे! यह तो उनकी शान में बट्टा लगानेवाली बात थी। लेकिन वचगान अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। उसने कह दिया कि यदि अनैत के साथ उसकी शादी नहीं की गई तो वह जनम भर कुँवारा ही रहेगा। आखिर राजा-रानी को उसके हठ के आगे झुकना पड़ा। उन्होंने वगिनाक के साथ दो दरबारियों को आतसिक भेजा कि जाकर अनैत के साथ वचगान का विवाह पक्का कर आएँ।

अरण गड़रिये ने उनका अच्छी तरह सत्कार किया। मेहमानों के बैठने के लिए उसने एक कालीन बिछा दिया।

कालीन की सुन्दर बनावट देखकर वगिनाक बोला—यह कालीन तो बहुत ही बढ़िया है। मेरा खयाल है कि आपकी पत्नी ने इसे बुना होगा।

अरण ने जवाब दिया—जी नहीं। मेरी पत्नी को मरे दस साल हो गये हैं। यह कालीन मेरी लड़की अनैत ने अपने हाथों से बुनकर तैयार की है।

'ऐसा सुन्दर कालीन तो हमारे राजा के पास भी नहीं है। आपकी बेटी की कारीगरी की प्रशँसा ठेठ राजमहल तक पहुँच गई है। राजा अपने इकलौते और उत्तराधिकारी राजकुमार वचगान के साथ अनैत का विवाह करना चाहते हैं। उन्होंने हमें आपके पास सन्देशा लेकर भेजा है।'

यह कहकर दरबारी चुप हो गये। उनका खयाल था कि अरण इस समाचार को सुनकर या तो खुशी के मारे बावला हो जायगा या इस पर विश्वास ही नहीं करेगा। लेकिन अरण

ने कुछ भी नहीं किया। वह सिर झुकाये बैठा रहा और अपनी अंगुली कालीन के बेल-बूँटों पर फिराने लगा।

यह देख वगिनाक बोला—क्यों भाई अरण, तुम उदास क्यों हो गये? हम खुश खबर लेकर आये हैं। कोई बुरी खबर नहीं लाये हैं। हम तुम्हारी बेटी को ज़बरदस्ती नहीं ले जाएँगे। यदि तुम राजी-खुशी से उसे भेजोगे तो ले जाएँगे; नहीं भेजोगे तो नहीं ले जाएँगे।

अरण बोला—मेरे अज़ीज दोस्त, बात यह है कि मैं अपनी लड़की की शादी करनेवाला कोई नहीं हूँ। वह खुद-मुख्त्यार है। यदि वह जाना चाहे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।

इसी बीच अनैत पके हुए फलों का एक डलिया लेकर आई। मेहमानों को विनयपूर्वक नमस्कार कर एक तश्तरी में फल उसने मेहमानों के आगे रख दिये। फिर ताने-बाने के आगे बैठकर काम करने लगी। उसकी फुर्ती देखकर दरबारी आश्चर्य-चकित रह गये।

वगिनाक बोला—अनैत, तुम अकेली काम क्यों कर रही हो। मैंने सुना है कि तुम्हारे शिष्यों की कमी नहीं है। क्या तुम उन्हें पढ़ना-लिखना भी सिखलाती हो?

'जी हाँ' अनैत ने जवाब दिया—अब तो हमारे गड़रिये भी पढ़ गये हैं। भेड़ चराते समय एक दूसरे को सिखलाते हैं। हमारे जङ्गल के हरएक पेड़ के तने पर शब्द लिखे हुए हैं। झोपड़ियों की दीवालों, ढोकों और चट्टानों पर भी कोयले से शब्द लिख दिये गये हैं! एक आदमी लिखता है और दूसरा उसका अनुसरण...

वगिनाक बोला—हम लोगों में पढ़ने की ऐसी चाह नहीं है। शहर के लोग इस मामले में काफी सुस्त हैं। लेकिन अगर तुम शहर चली चलो तो वहाँ के हर आदमी को समझदार

बना दोगी। अनैत, अपना काम छोड़ दो। मैं तुम्हारे पास एक सन्देशा लाया हूँ। देखो, हमारे राजा ने तुम्हारे लिए यह क़ीमती सौगात भेजी है।

यह कहकर वगिनाक ने रेशमी पोशाक और क़ीमती जेवर निकाले। एक निगाह उन चीज़ों को देखकर अनैत ने पूछा—राजा ने मुझ पर यह महरबानी क्यों की?

'राजकुमार वचगान ने तुम्हें नाले पर देखा था। तुमने उसे पानी पिलाया था। राजा तुम्हें राजकुमार की रानी बनाना चाहते हैं। इसी लिए उन्होंने हमें तुम्हारे पास भेजा है। यह अँगूठी, यह हार, चूड़ियाँ और यह सब सामान तुम्हारे ही लिए है।'

'अच्छा, तो वह शिकारी राजा का बेटा था?'

'हाँ।'

वह बड़ा ही सुन्दर जवान है। लेकिन क्या कोई हुनर भी जानता है?'

'अनैत, वह राजकुमार है। सारी प्रजा उसकी नौकर है। उसे हुनर जानने की ज़रूरत ही क्या है?'

'ठीक है। लेकिन राजा को भिखारी होते क्या देर लगती है? हर आदमी को चाहे वह राजा हो, राजकुमार हो या नौकर हो, कोई न कोई हुनर जानना ही चाहिये।'

अनैत की बात सुनकर दरबारियों को बहुत ही विस्मय हुआ। लेकिन अरण को अपनी बेटी की इस बात से बड़ी खुशी हुई।

'तो क्या तुम राजकुमार से इसलिए शादी करने को तैयार नहीं हो कि वह कोई हुनर नहीं जानता!'—दरबारियों ने पूछा।

'हाँ। आप यह सौगात वापिस ले जा सकते हैं। और मेरी ओर से राजकुमार से कह देना कि मैं उसे प्यार करती

हूँ, लेकिन मेरी गुस्ताखी माफ़ हो, मैं उस आदमी से विवाह नहीं कर सकती जो कोई हुनर न जानता हो। मेरा ऐसा ही प्रण है।'

जब दरबारियों ने देखा कि अनैत अपने प्रण पर अटल है तो उन्होंने अधिक जोर नहीं दिया। वे राजा के पास लौट आये और सारा किस्सा कह सुनाया।

यह सुनकर राजा-रानी को बड़ी खुशी हुई। उन्होंने सोचा—संभव है अब वचगान अपनी ज़िद छोड़ दे। लेकिन वचगान ने कहा—अनैत का कहना सच है। मुझे भी दूसरे लोगों की तरह कोई न कोई हुनर जानना ही चाहिये।

तब राजा ने अपने मुसाहिबों का दरबार किया। और उनसे सलाह ली। सब ने एक राय से सलाह दी कि राजकुमार को जरी पर बेल-बूटे बुनने का काम सीखना चाहिये। यही हुनर राजकुमार के उपयुक्त है। फिर फारस से एक होशियार बुनकर बुलाया गया। साल भर में वचगान बुनना सीख गया और उसने खुद अपने हाथों से जरी की एक सुनहरी किनार बुनकर अनैत के पास भेजी।

ज़री की पाड़ लेकर जब नौकर अनैत के पास पहुँचा तो उसने उसे रख लिया और बोली—राजकुमार को यह क़ालीन भेंट करना और मेरी स्वीकृति कह देना। साथ ही यह कहावत भी कह देना कि—मुसीबत में हुनर ही साथ देता है और ज़रूरत के वक्त बुनकर का धन्धा भी काम आता है।

फिर धूमधाम से शादी की तैयारियाँ की गईं और सात दिन और सात रात तक सारे राज्य में राजकुमार की शादी का उत्सव मनाया गया।

[३]

शादी के थोड़े दिन बाद ही वचगान का प्यारा और विश्वासपात्र नौकर वगिनाक गुम हो गया। उसकी खूब तलाश की गई लेकिन कहीं कोई पता नहीं चला। आखिर हताश होकर राजकुमार को वगिनाक की खोज बन्द करना पड़ी। थोड़े दिन बाद बूढ़े राजा-रानी मर गये और वचगान राजा हुआ।

एक दिन अनैत ने उससे कहा—राजा, मैं देख रही हूँ कि तुम्हें अपनी रियासत के बारे में सही जानकारी नहीं मिलती। लोग-बाग सही-सही बतलाते नहीं हैं। वह कहते हैं कि सब कुछ ठीक-ठाक है। पर मान लो ऐसा नहीं हुआ तो? अच्छा हो कि तुम भेष बदलकर अपनी प्रजा में घूमो और लोगों से मिलकर सही-सही जानकारी हासिल करो। मेरे खयाल में तुम्हें कभी भिखारी, कभी मज़दूर और कभी व्यापारी बनकर अपनी रियासत में घूमना चाहिये।

वचगान बोला—अनैत, तुम्हारा कहना सही है। पहले जब मैं शिकार खेलने जाया करता था तो लोगों के बारे में मेरी जानकारी ज्यादा सही थी। लेकिन अब मैं कैसे जाऊँ? मेरे बिना राज-काज कौन चलायेगा?

अनत बोली—मैं चलाऊँगी। किसीको कानों कान खबर भी नहीं होगी कि तुम बाहर गये हो।

'अच्छी बात है। मैं कल ही यात्रा पर चल दूँगा। अगर बीस दिन के अन्दर लौटकर न आऊँ तो समझ लेना कि मैं या तो मुसीबत में फँस गया हूँ या मर गया हूँ।'

[४]

ग़रीब किसान का भेस बनाकर वचगान राजा अपनी रियासत में घूमने लगा। काफी देखने-सुनने के बाद वह एक विदेशी शहर पिरोज़ में पहुँचा।

शहर के बीच बाजार में एक बड़ा सा चौराहा था, जिस के चारों ओर व्यापारियों और कारीगरों की दुकानें थीं।

वचगान चौराहे में बैठ गया। थोड़ी देर बाद उसने एक भीड़ को आते हुए देखा। भीड़ के आगे-आगे एक सम्माननीय वृद्ध पुरुष था। वह बूढ़ा बहुत ही धीरे-धीरे चल रहा था। लोग-बाग इधर-उधर होकर उसके लिए रास्ता बना रहे थे और उसके पाँवों के नीचे चलने के लिए ईंटें रखते जाते थे। वचगान ने एक आदमी से पूछा—क्यों भाई, यह बूढ़ा कौन है?

उस आदमी ने जवाब दिया—तुम नहीं जानते? यह हमारे शहर के सबसे बड़े पुजारी हैं। इन्हें दया-माया का इतना ध्यान रहता है कि धरती पर पाँव रखकर भी नहीं चलते। ईंटों पर चलते हैं ताकि पाँवों के नीचे आकर कीड़े-मकोड़े मर न जायें।

फिर लोगों ने चौराहे में एक क़ालीन बिछा दिया। वह पुजारी उस पर उकड़ूँ बैठकर आराम करने लगा। पुजारी को अच्छी तरह देखने के इरादे से लोगों की भीड़ को हटाता हुआ वचगान सबके आगे पहुँच गया। पुजारी की निगाहें काफी तेज़ थीं। उसने वचगान को देखते ही समझ लिया कि यह कोई परदेशी है।

पुजारी ने उससे पूछा-तुम कौन हो और क्या चाहते हो?

वचगान ने जवाब दिया—मैं एक परदेशी कारीगर हूँ। इस शहर में काम की तलाश में आया हूँ।

'अच्छी बात है। मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें काम दूँगा और काफी पैसा दूँगा।'

वचगान राजी हो गया। पुजारी ने अपने साथवालों के कान में कुछ कहा और वे सब लोग इधर-उधर चले गये। थोड़ी देर बाद वे मज़दूरों की पीठ पर बहुत सा सामान लदवाये हुए आये। बड़ा पुरोहित उठकर अपने स्थान की ओर रवाना हुआ।

वचगान भी चुपचाप उनके साथ हो लिया। चलते चलते वे लोग शहर के परकोटे के पास पहुँचे।

वहाँ पहुँच कर बड़े पुजारी ने लोगों को आशीर्वाद दिया और लोग-बाग अपने-अपने घर चले गये। अब खाली छोटे पुजारी, मज़दूर और वचगान रह गये। शहर से बाहर आकर वे सब एक ऊँची दीवाल की ओर बढ़े। एक बड़ी-सी चाभी निकाल कर बड़े पुजारी ने दीवाल में लगे फाटक को खोला। दीवाल के घेरे में एक चौराहा था। चौराहे के बीचोबीच एक मन्दिर बना हुआ था। वहाँ पहुँच कर मज़दूरों ने अपना सामान नीचे रख दिया। बड़ा पुजारी मज़दूरों और वचगान को मन्दिर में ले गया। मन्दिर के अन्दर लोहे का एक बड़ा भारी दर्वाज़ा खोलकर उसने उनसे कहा—अन्दर चले जाओ। वहाँ तुम्हें काम दिया जायगा।

वे लोग चुपचाप अन्दर चले गये। आगे अन्धेरा गलियारा था। बड़े पुरोहित ने पीछे लोहे का दरवाज़ा बन्द कर लिया। लौटने का रास्ता तो बन्द हो ही चुका था इसलिए वचगान और उसके साथी अन्धेरे में आगे की ओर बढ़े।

[५]

काफी चलने के बाद वे लोग एक तहखाने में पहुँचे। वहाँ उन्होंने आदमियों के रोने और चीखने की आवाज़ें सुनीं। वहाँ बहुत से लोग मृत्यु-यन्त्रणा से पीड़ित हो रहे थे। तहखाने में भट्टियों पर बड़ी-बड़ी कड़ाहें चढ़ी हुई थीं। उन कड़ाहों में खाना पक रहा था। वचगान ने एक कड़ाह में झाँककर देखा और मारे डर के दो पग पीछे हट गया। लेकिन उसने अपने साथियों से कुछ भी नहीं कहा। वहाँ से आगे बढ़ने पर उन्हें एक दूसरा गलियारा मिला। वहाँ धुँधलके में प्रेत की तरह दुबले और पीले पड़े हुए सैकड़ों आदमी काम कर रहे थे। कोई

ज़री का काम कर रहा था, कोई सूती कपड़ा बुन रहा था और कोई सिलाई कर रहा था। उनमें से एक आदमी जो मुर्दे की तरह पीला था वचगान से बोला—जो पिशाच तुम्हें लुभाकर यहाँ लाया है वही हमें भी धोखा देकर इन तहखानों में लाया था। मैं नहीं कह सकता कि यहाँ काम करते हुए मुझे कितने साल हो गये। यहाँ न तो दिन का पता चलता है न रात का। हमेशा धुँधलका बना रहता है। मुझे सिर्फ इतना मालूम है कि मेरे साथ आये हुए सब आदमी मर गये हैं। लोग-बाग हुनर जानते हों या न जानते हों, उन्हें धोखा देकर यहाँ लाया जाता है। जो हुनर जानते हैं उनसे उनके मरने तक काम करवाया जाता है। जो हुनर नहीं जानते उन्हें कतलखाने में ले जाकर कत्ल कर दिया जाता है और रास्ते में जो कड़ाहे तुम देख आये हो उनमें उनका गोश्त पकाया जाता है। बड़ा पुजारी अकेला नहीं है। पचासों छोटे पुजारी इस काम में उसकी मदद करते हैं।

वचगान उस आदमी को पहिचान गया। वह उसका विश्वासपात्र नौकर वगिनाक था। लेकिन वचगान ने वगिनाक पर यह भेद प्रकट नहीं होने दिया। उसे डर लगा कि कहीं खुशी के मारे बावला होकर वगिनाक मर न जाय।

[६]

जब वगिनाक चला गया तो वचगान अपने साथियों की ओर मुड़ा और उनसे पूछा कि वे कौन हैं और क्या कर सकते हैं। एक ने बतलाया कि वह दर्जी है। दूसरा जुलाहा था। बाकी के लोगों को वचगान ने अपना मददगार बना लिया। थोड़ी ही देर बाद पाँव बजने की आवाज़ आई और एक डरावना पुजारी हथियारबन्द नौकरों के साथ आ धमका।

उसने पूछा—तुम लोग नये आये हो?

वचगान बोला—जी हाँ, हम हुज़ूर के ताबेदार हैं।

'तुममें से कोई कुछ हुनर भी जानता है?'

इस बार भी वचगान ही बोला—जी हाँ, हम सब कारीगर हैं। हम ज़री और कलाबतू का काम जानते हैं और हमारी बनाई ज़री सोने से भी महँगी होती है।

'अच्छा, तुम्हारा बनाया कपड़ा इतना महँगा होता है?'

'मैं आपसे झूठ अर्ज़ नहीं कर रहा हूँ। आप हमेशा मेरे काम की निगरानी रखकर खुद इत्मिनान कर सकते हैं।'

'अच्छी बात है। मैं खुद ही निगरानी रखूँगा। अब यह बतलाओ कि तुम्हें औज़ार और सामान क्या-क्या चाहिये? काम तुम्हें कारखाने में ही करना होगा।'

वचगान ने कहा—हम वहाँ अपना काम ठीक से नहीं कर सकेंगे। हमें यहीं काम करने दिया जाय। हमारे खाने के बारे में आप इतना कर दीजिये कि हम में से कोई माँस नहीं खाता है। माँस खाते ही हम सब मर जाएँगे।

पुजारी बोला—अच्छी बात है। मैं तुम्हारे लिए रोटी और तरकारी भेज दूँगा। लेकिन अगर तुम्हारा काम उतना क़ीमती नहीं हुआ, जितना कि तुम कहते हो, तो मैं तुम्हें क़त्लखाने में भेज दूँगा जहाँ तुम्हें मारने से पहले काफी तकलीफें दी जाएँगी।

पुजारी ने जाकर उनके लिए फल, तरकारी और रोटियाँ भेज दीं और वचगान ने काम शुरू कर दिया। थोड़े ही दिनों में उसने गुप्त संकेतों वाली ज़री की एक बढ़िया किनार तैयार कर दी। उस किनार के बेलबूटों में उसने उन तहखाने में किये जाने वाले भीषण अत्याचारों और दमन का पूरा हाल लिख दिया था। लेकिन वह लिखावट सांकेतिक थी और हर कोई उसे पढ़ नहीं सकता था।

ज़री की उस किनार को देखकर वह पुजारी बहुत ही प्रसन्न हुआ।

मौक़ा देखकर वचगान ने उस पुजारी से कहा—मैंने तो आपसे पहले ही कहा था कि हमारा बनाया कपड़ा सोने से भी ज्यादा क़ीमती होता है। असल में तो यह किनारी बेश कीमती है क्योंकि इसमें तिलिस्म बनाया गया है। अफ़सोस यही है कि इस तिलिस्म को हर कोई समझ नहीं सकता। मल्का महारानी अनैत ही उसे समझ सकती हैं।

जब लालची पुजारी ने यह सुना तो उसके मुँह में पानी भर आया। उसने तै कर लिया कि वह इस किनारी का मुनाफा अकेले ही हड़प कर जायगा। यहाँ तक कि उसने बड़े पुजारी से भी यह बात गुप्त रखी और उसे किनारी दिखलाई तक नहीं। खुद ही उसे लेकर वह महारानी अनैत के पास चल दिया।

(७)

अनैत राजकाज सँभालने में बड़ी कुशल थी। वचगान की अनुपस्थिति में भी उसने राजकाज बखूबी चलाया। सब लोग उससे खुश थे और उसकी तारीफ करते थे। राजा के विदेश जाने का किसी को पता तक नहीं चला। लेकिन अनैत हमेशा चिन्तित रहती थी। दस दिन हो गये थे लेकिन अभी तक वचगान लौट कर नहीं आया था।

एक दिन सवेरे नौकर ने खबर दी कि एक परदेशी व्यापारी कुछ कीमती चीजें बेचने के लिए लाया है। अनैत ने उसे अपने सामने लाने का हुक्म दिया।

एक क्रूर चेहरे का आदमी रानी के सामने लाया गया। उसने अभिवादन कर चाँदी की एक थाल में ज़री की किनार रानी के आगे की। किनार पर की गुप्त लिखावट की ओर ध्यान दिये बिना ही रानी ने उसकी ओर एक सरसरी निगाह डालकर पूछा—इसकी क़ीमत क्या है?

'मल्का महारानी, अगर इस ज़री की लागत ही जोड़ी जाय तो यह सोने से तिगुनी महँगी है। बाक़ी जो कुछ आप मुनासिब समझें मैं मंजूर कर लूँगा।'

'क्या सच ही यह किनार इतनी महँगी है?'

'खता माफ़ हो महारानी, लेकिन इस किनार में खुदा की बरकत है। आप ये बेलबूटे और नक्काशी देख रही हैं न? असल में ये तिलिस्म हैं। दुःख और दुर्भाग्य इस किनार को पहिनने वाले के पास फटकते तक नहीं हैं।'

'तो लाओ, देखूँ।' यह कहकर अनैत ने ज़री की उस किनार को खोलकर उस पर बनी संकेत लिपि को ध्यान पूर्वक देखना शुरू किया। लिखा था—

'प्यारी अनैत, मैं एक भयानक नरक में आ फँसा हूँ। इस किनार को तुम्हारे पास लाने वाला आदमी उस नरक के रखवारों में से ही एक है। वगिनाक भी यहीं है। पिरोज़ शहर के पूर्व में दीवाल से घिरे मन्दिर के तहखाने में हमारी तलाश करना। बिना मदद के हम जीत नहीं बचेंगे। —वचगान।'

व्याकुल होकर अनैत ने उस लिखावट को दो-तीन बार पढ़ा। लेकिन उसने अपने मन के भाव ज़ाहिर नहीं होने दिये। व्यापारी को उसने ऐसा बतलाया मानो वह किनार की नक्काशी और बेलबूटों की तारीफ कर रही है। आखिर में वह बोली—तुम्हारा कहना सही है। इस किनार के बेलबूटे दिल का बोझ हर लेते हैं। सुबह से मैं उदास थी लेकिन इस किनार को देखते ही दिल खुशी से बाग़-बाग़ हो गया। यह किनार बेश क़ीमत है। मैं इसके लिए आधा राज्य भी देने को तैयार हूँ। लेकिन उस कारीगर को भी लाओ जिसने यह किनार बनाई है। तुम्हारे साथ मैं उसे भी इनाम देना चाहती हूँ।

उस लालची पुजारी ने कहा—महारानी, मैं इस किनार

को बनाने वाले कारीगर को नहीं जानता। मैंने, तो इसे हिन्दुस्तान में एक यहूदी के पास से खरीदा था। और यहूदी ने इस एक अरबी सौदागर से मोल लिया था। लेकिन अरबी सौदागर इसे कहाँ से लाया यह कोई नहीं जानता।

'लेकिन अभी तो तुमने कहा था कि इसकी लागत में तुम्हें काफी खर्च करना पड़ा है। इसका मतलब तो यह हुआ कि तुमने स्वयं इसे तैयार करवाया है, किसी से खरीदा नहीं है।'

'महारानी, हिन्दुस्तान में मुझे यही बतलाया गया था, मैं तो...

'चुप रहो।' अनैत ने गरज कर कहा—मैं जानती हूँ तुम कौन हो! कोई है दरवाज़े पर! इस अत्याचारी को जेल में बन्द करो।

(८)

जब उसके हुक्म की पाबंदी हो गई तो अनैत ने फौज़ इकट्ठा की। खुद एक शानदार घोड़े पर सवार हुई और हुक्म दिया—चलो, आगे बढ़ो।

फौज लेकर वह पिरोज़ शहर पहुँची। शहर के चौराहे में पहुँचकर उसने अपना घोड़ा रोका। घोड़ा थक गया था। और उसके मुँह से फेन निकल रहे थे। वह इतनी सुन्दर थी कि पिरोज़ शहर के निवासियों ने उसे स्वर्ग की देवी समझा।

उसने पिरोज़ शहर के निवासियों से कहा—मुझे तुम्हारे मन्दिर का रास्ता बतलाओ।

लोग-बाग उसे मन्दिर ले गये। बहुत-सी भीड़ उसके पीछे हो ली।

पुजारियों ने समझा कि यात्री आये हैं इसलिए उन्होंने पहला फाटक खोल दिया। अनैत ने अन्दर जाकर मन्दिर के दरवाजे खोलने का हुक्म दिया। अब तो पुजारी समझ गया

कि उनका भण्डा फूट गया है। इसलिए बड़ा पुजारी रानी पर झपटा लेकिन अनैत के चंचल और समझदार घोड़े ने उसे अपने पाँवों तले कुचल दिया।

अनैत के सिपाहियों ने दूसरे पुजारियों को भी मौत के घाट उतार दिया। पिरोज़ शहर के निवासी डर और अचम्भे से दूर खड़े देखते रहे।

अनैत ने उन्हें पुकार कर बुलाया—पास आकर देखो। तुम्हारे देवताओं के मन्दिर में क्या छिपा है?

मन्दिर के दरवाज़े तोड़े गये। और लोगों ने एक अति ही दारुण दृश्य देखा। प्रेत जैसे नर कङ्काल उस भयावने तहखाने में से निकले चले आ रहे थे। वह इतने कमज़ोर थे कि खड़े भी नहीं रह सकते थे। उजाले ने उनकी आँखों में चकाचौंध पैदा कर दी थी और वे अन्धों की तरह टटोल-टटोल कर आगे बढ़ रहे थे। सबके बाद में वचगान और वगिनाक बाहर निकले। उन्होंने आँखें बन्द कर रखी थीं ताकि धूप में कहीं अन्धे न हो जायँ। उसके बाद अनैत के सिपाही तहखाने में घुस गये और मुर्दों के शव तथा बन्दियों को यन्त्रणा देने के औज़ार निकाल लाये।

वगिनाक ने अनैत और वचगान को पहिचाना। वह रानी के पाँवों पर गिर पड़ा और रोते हुए बोला—महारानी, आज आपने हमें बचा लिया।

यह सुन वचगान बोला—तुम भूलते हो वगिनाक। रानी ने तो हमें उसी दिन बचा लिया था, जब उसने पूछा था कि क्या तुम्हारा राजकुमार कोई हुनर जानता है। याद है, उस समय तुम कितना हँसे थे?

वचगान राजा के साहस की यह कथा देश-देशान्तर में फैल गई। अनैत और वचगान का नाम हर आदमी की जबान

पर हो गया। आशुगी नामक जन-कवियों ने वचगान राजा और अनैत रानी के कई गीत लिखे। वे गीत तो नष्ट हो गये लेकिन वचगान और अनैत की कहानी अब भी लोग-बाग बड़े प्रेम से कहते और सुनते हैं।

खटमल और पिस्सू

पहाड़ों में एक झोपड़ी थी। उस झोपड़ी में एक गरीब आदमी रहता था। उसके बिस्तर में एक खटमल रहता था और उसके कपड़ों में एक पिस्सू। खटमल को बिस्तर में बड़ा आराम था। और पिस्सू कपड़ों में बड़े मज़े से रहता था। एक दिन खटमल और पिस्सू की तक़दीर फूट गई। नहीं तो, न जाने कब तक वे दोनों अमन-चैन से उस ग़रीब आदमी के बिस्तर और कपड़ों में रहते।

बात यह हुई कि एक दिन वह आदमी बीमार होकर मर गया। उसके पड़ौसी आये और उसे क़ब्रस्तान में ले जाकर दफ़ना दिया। अब बेचारे खटमल और पिस्सू अनाथ हो गये!

वे खूब-खूब रोये; जी भरकर रोये। उन्हें भूख लगी; पर खाने को कुछ भी नहीं था। उन्हें प्यास लगी; पर पीने को भी कुछ नहीं था।

उन्होंने सारा बिस्तरा ढूँढ़ डाला, सब दिवालें देख डालीं, सारी झोपड़ी छान डाली; लेकिन न तो कुछ खाने को मिला और न कुछ पीने को ही।

तब पिस्सू ने खटमल से पूछा—आस-पड़ौसी, पास-पड़ौसी, बोलो अब क्या करना? खाना कहाँ से, पीना कहाँ से, कैसे जीते रहना?

और खटमल ने जवाब दिया—दुनिया बहुत बड़ी है। इसमें ग़रीब आदमियों की कमी नहीं। चलो, दूसरा ग़रीब आदमी ढूँढ़ा जाय। नहीं तो, हम भूखों मर जायँगे।

यह सुनकर पिस्सू मारे खुशी के उछल पड़ा और बोला—भई, बात तो तुमने पते की कही। चलो, चला जाय।

तो साहब, खटमल और पिस्सू दोनों इस झोपड़ी से निकले और दूसरे ग़रीब आदमी की तलाश में चले।

खटमल अपने छोटे-छोटे पाँवों से ठुमक-ठुमक कर दौड़ने लगा और पिस्सू उसके साथ-साथ घास में उलझता हुआ चलने लगा। पिस्सू बेचारा चल नहीं सकता था। वह सिर्फ फुदक सकता था।

उसने खटमल से कहा—खटमल भैया, तुम आगे चलो। मैं यहाँ ठहरता हूँ। थोड़ी देर में फुदकता हुआ आ मिलूँगा।

खटमल ने कहा—अच्छी बात है। और खटमलराम घास, बालू, कङ्कड़, पत्थर पर और भी तेज़ी से दौड़ने लगे।

पिस्सू बैठा देखता रहा। जब खटमल बहुत आगे निकल गया तो वह उठा और पलक मारते ही फुदकता हुआ खटमल के पास पहुँच गया।

खटमल और पिस्सू इस तरह न जाने कितनी देर तक चलते रहे और चलते-चलते एक नदी के किनारे पहुँचे।

पिस्सू ने खटमल से कहा—अब हमें नदी पार करना चाहिये।

खटमल ने जवाब दिया—बेशक, नदी तो पार करना ही चाहिये।

पिस्सू कूदा और एक ही फुदकान में पलक मारते नदी के उस पार पहुँच गया।

दूसरे किनारे से उसने आवाज़ दी—ओ खटमल भैया, सुनते हो! अब तुम भी कूद आओ। मगर देखना कहीं पानी में मत गिर पड़ना!

खटमल ने ज़रा अकड़कर कहा—हाँ-हाँ, कूद आएँगे। क्या तुम समझते हो कि मैं कूद नहीं सकूँगा? क्या मैं तुमसे भी गया बीता हूँ? देखो अभी कूदता हूँ। यह कूदा....

ऐसा कहते हुए खटमल ने दौड़ लगाई और कूदा; लेकिन वह उस किनारे तक नहीं पहुँचा। बीच नदी में छपाक से जा गिरा। अब तो वह घबराकर सोचने लगा—बापरे, मरे! फिर ज़ोर से चिल्लाकर बोला—ओ पिस्सू दादा, बचाओ-बचाओ! नहीं तो मर जाऊँगा। डूबा जा रहा हूँ मैं तो।

पिस्सू ने खटमल को नदी में गिरते हुए देख लिया था और मारे डर के फुदक रहा था। जब उसने खटमल की आवाज़ सुनी तो और भी ज़ोर से फुदकने लगा। वह खटमल की मदद तो करना चाहता था पर उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कैसे क्या करे!

उसने चिल्ला कर कहा—खटमल, भैया, मेरी तो अकल ही काम नहीं करती। तुम्हीं बताओ, मैं तुम्हें कैसे बचा सकता हूँ?

'एक कड़ा बाल फेंक दो।'

'बाल कहाँ मिलेगा?' पिस्सू ने पूछा।

खटमल ने पानी में हाथ-पैर मारते और अपने आपको डूबने से बचाते हुए कहा—जङ्गल में सूअर के पास मिलेगा। जल्दी करो, नहीं तो मैं डूब जाऊँगा।

पिस्सू ने कहा—खटमल भैया, डूबना मत। मैं अभी

जंगल जाता हूँ और पलक मारते सूअर का बाल लेकर आता हूँ।

पिस्सू वहाँ से भागा और फुदकता हुआ घने जंगल में पहुँचा। वहाँ उसे जङ्गली सूअर मिला। सूअर को देखकर पिस्सू बोला—सूअर, सूअर, बाल दे। मैं उससे नदी में डूब रहे अपने दोस्त खटमल को निकालूँगा।

सूअर जवाब में घुरघुराया—पहले बलूत से कहो कि वह मुझे चिलगोजे दे। मैं चिलगोजे खाकर तुम्हें अपना बाल दूंगा फिर तुम उस बाल से अपने दोस्त खटमल को डूबने से बचाओगे।

वहाँ से पिस्सू फुदकता हुआ बलूत के पेड़ के पास पहुँचा और बोला—बलूत, बलूत! थोड़े से चिलगोजे दे। मैं चिलगोजे सूअर को दूँगा। सूअर चिलगोजे खाकर मुझे बाल देगा। बाल लेकर मैं नदी किनारे जाऊँगा और पानी में डूब रहे अपने दोस्त खटमल को बचाऊँगा।

बलूत ने अपनी पत्तियाँ हिलाकर कहा—पहले चिड़िया से कहो कि वह मेरी जड़ें नहीं खोदे। अगर वह जड़ें खोदना बन्द कर देगी तो मैं सूअर को बहुत से चिलगोजे दूंगा। सूअर चिलगोजे खाकर तुम्हें बाल देगा। वह बाल ले जाकर तुम अपने दोस्त खटमल को नदी में से निकालोगे।

पिस्सू वहाँ से फुदकता हुआ चिड़िया के पास पहुँचा और बोला—चिड़िया, चिड़िया! बलूत की जड़ें मत खोद तू जड़ें खोदना बन्द कर देगी तो बलूत सूअर को चिलगोजे देगा। सूअर चिलगोजे खाकर मुझे बाल देगा। मैं वह बाल ले जाकर अपने दोस्त खटमल को पानी से बाहर निकालूँगा।

चिड़िया ने जवाब दिया—पहले तुम जाकर बिल्ली से कहो कि वह मेरे बच्चों को खाना बन्द करे। अगर बिल्ली मेरे बच्चों को खाना छोड़ देगी तो मैं भी बलूत की जड़ें खोदना छोड़ दूँगी। फिर बलूत सूअर को चिलगोजे देगा। सूअर तुम्हें बाल देगा। और तुम बाल से अपने डूब रहे दोस्त खटमल को बचालोगे।

पिस्सू ने सोचा कि बिल्ली के पास जाना ही पड़ेगा। इसलिए वह फुदकता हुआ बिल्ली के पास पहुँचा।

पिस्सू ने बिल्ली से कहा—बिल्ली, बिल्ली! चिड़िया के बच्चे खाना छोड़ दे। चिड़िया बलूत की जड़ें खोदना छोड़ देगी। बलूत बहुत से चिलगोजे देगा। सूअर चिलगोजे खाकर अपना एक बाल देगा। और मैं उस बाल से अपने डूब रहे दोस्त खटमल को पलक मारते ही बचा लूँगा।

बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ कर बोली—जङ्गली जानवरों का देवता अफ़सानी तुम्हारी इस अच्छे काम में मदद करे। लेकिन जब तक गाय मुझे दूध नहीं देती मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकती। इसलिए पहले थोड़ा-सा दूध लाओ। दूध मिलते ही अपनी मूछों की सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि मैं चिड़िया के बच्चे पकड़ना छोड़ दूँगी। चिड़िया बलूत की जड़ें खोदना छोड़ देगी। बलूत सूअर को बहुत से चिलगोजे देगा। सूअर तुम्हें बाल देगा। और उसके बाद जंगल के देवता तुम्हारी मदद करेंगे।

पिस्सू ने देखा कि वह बिना दूध के बिल्ली को राजी नहीं कर सकता इसलिए फुदक-फुदक करता हुआ गाय के पास पहुँचा।

गाय-गाय! बिल्ली को दूध दे। बिल्ली दूध पीकर चिड़िया के बच्चों को पकड़ना छोड़ देगी। चिड़िया बलूत की जड़ें खोदना छोड़ देगी। बलूत बहुत से चिलगोजे देगा। सूअर चिलगोजे खाकर मुझे अपना एक बाल देगा। मैं उस बाल से पानी में डूब रहे अपने दोस्त खटमल को बाहर निकालूँगा।

गाय ने रंभाकर पिस्सू से कहा—मुझे दूध देने में कोई एतराज नहीं। मेरा दूध ले जाओ और बिल्ली को पिलाओ। बिल्ली दूध पीकर चिड़िया के बच्चों को पकड़ना छोड़ देगी। तब चिड़िया बलूत की जड़ों को कुरेदना बन्द कर देगी और बलूत बहुत से चिलगोजे देगा। उन चिलगोजों को खाकर सूअर तुम्हें एक बाल देगा। और तुम उस बाल से अपने दोस्त खटमल की जान बचाओगे। पहाड़ पत्थर के देवता इस पुण्य कार्य के लिये तुम्हारा भला करेंगे।

पिस्सू ने गाय से कहा—भगवान तुम्हारा भला करे। और पिस्सू को इतनी खुशी हुई-इतनी खुशी हुई कि मानो उसको पेट भर खून ही पीने को मिल गया हो। वह मारे खुशी के खाये-पीये पिस्सू की तरह फुदकने भी लगा।

फिर पिस्सू ने गाय से दूध लिया और दौड़ा-दौड़ा बिल्ली के पास पहुँचा। बिल्ली ने दूध पीकर जबान से अपनी मूछें चाटीं और आँखें मूँद कर बोली—जाओ, चिड़िया से कह दो कि उसके बच्चों को पकड़ कर खाना तो दूर रहा अब मैं उनकी तरफ देखूँगी भी नहीं।

पिस्सू फुदकता हुआ चिड़िया के पास गया और बोला—बिल्ली ने कहा है कि चिड़िया के बच्चों को खाना तो दूर रहा, अब वह उनकी तरफ देखेगी भी नहीं।

यह सुन चिड़िया बोली—अच्छी बात है। मैं भी बलूत की जड़ें नहीं खोदूँगी।

पिस्सू भागा-भागा बलूत के पास गया। बलूत ने अपनी पत्तियाँ हिलाकर सूअर को बहुत से चिलगोजे दिये और सूअर ने पिस्सू को एक बाल दिया।

सूअर का बाल लेकर पिस्सू फुदकता हुआ नदी किनारे पहुँचा। वहाँ जाकर उसने देखा कि उसका दोस्त खटमल पानी में डूबने ही वाला है। पिस्सू पहले तो बहुत डर गया लेकिन तुरन्त बाल का एक सिरा पानी में फेंककर बोला—खटमल भैया, बाल मज़बूती से पकड़ लेना।

बाल देखकर डूबते हुए खटमल के जी में जी आया। उसने पूरी ताकत लगाकर बाल का एक सिरा अपने छोटे-छोटे पाँवों से पकड़ लिया। पिस्सू ने खटमल को खींचकर पानी से बाहर निकाल लिया।

बाहर निकलकर खटमल ने दूब पर अपने पाँव पोंछे, अपनी मूछें पोंछी और गहरी साँस लेकर बोला—तुम जुग-जुग जीयो पिस्सू दादा। तुमने आज मेरी जान बचाई।

पिस्सू बोला—मुझे धन्यवाद क्यों देते हो? धन्यवाद तो सूअर को देना चाहिये। अगर वह अपना बाल नहीं देता तो मैं तुम्हें कैसे बचाता?

खटमल ने कहा—तुम्हारा कहना सही है। तो चलो, चलकर सूअर को धन्यवाद दिया जाय।

पिस्सू ने कहा—लेकिन बिना कुछ खाये पीये तीन दिन और तीन रातें निकल गई हैं। चलो, पहले कुछ खाने-पीने का इन्तजाम किया जाय।

खटमल बोला—नहीं, पहले सूअर को धन्यवाद दे लें, उसके बाद खाने-पीने का जुगाड़ करेंगे।

पिस्सू बिलकुल थक गया था। उसके पाँव दर्द कर रहे थे। पेट पीठ से सट गया था; परन्तु कोई चारा नहीं था। इसलिये उसे खटमल की बात मानना पड़ी। दोनों सूअर के पास चले। बहुत देर चलने के बाद वे सूअर के पास पहुँचे।

'तुमने पिस्सू को अपना बाल दिया और पिस्सू ने मुझे उस बाल के जरिये पानी से बाहर निकाला। मुसीबत में तुमने मेरी जो मदद की उसके लिए जंगली जानवरों का देवता अफ़सानी तुम्हारा भला करेगा।'

यह सुनकर सूअर बोला—नहीं भाई, मुझे धन्यवाद देने की कोई ज़रूरत नहीं। तुम बलूत के पेड़ को धन्यवाद दो। उसने चिलगोजे दिये और उन्हें खाकर मैंने अपना बाल दिया। और तब पिस्सू तुम्हें डूबने से बचा सका।

वहाँ से खटमल और पिस्सू बलूत के पेड़ के पास गये।

खटमल बोला—ओ बलूत, तुमने मेरी जान बचाई। तुम्हारे दिये चिलगोजे खाकर सूअर ने पिस्सू को अपना बाल दिया। और पिस्सू ने उस बाल से मुझे बचाया। भगवान तुम्हारा भला करे और तुम्हारी लम्बी उमर हो।

बलूत ने अपनी पत्तियाँ हिलाते हुए जवाब दिया—भगवान की वैसे ही मेरे उपर महरबानी है और उसने मुझे काफ़ी लम्बी ज़िन्दगी दे रखी है। मेरे बदले चिड़िया को धन्यवाद दो और भगवान से कहो कि वह चिड़िया को लम्बी उमर दे। क्योंकि उसने मेरी जड़ों को खोदना बन्द कर दिया है।

तभी मैं सूअर को बहुत से चिलगोजे दे सका। उन चिलगोजों को खाकर सूअर ने पिस्सू को अपना बाल दिया। और तब कहीं पिस्सू तुम्हें पानी से बाहर निकाल सका।

वहाँ से पिस्सू और खटमल भागे-भागे चिड़िया के पास पहुँचे।

खटमल बोला—ओ चिड़िया, तुमने बलूत की जड़ों को खोदना छोड़ दिया इसलिए लाख-लाख धन्यवाद। क्योंकि बलूत ने चिलगोजे दिये, जिन्हें खाकर सूअर ने अपना बाल दिया और बाल लेकर पिस्सू ने मुझे पानी में से निकाला।

चिड़िया चहचहाई—मेरे बदले बिल्ली को धन्यवाद दो। उसने मेरे बच्चों को खाना छोड़ दिया तो मैंने बलूत की जड़ें खोदना बन्द कर दीं। तब बलूत ने बहुत से चिलगोजे दिये और सूअर ने पिस्सू को अपना बाल दिया। और पिस्सू ने तुम्हें पानी से निकाला।

तब खटमल बोला—चलो, बिल्ली को ढूँढ़ा जाय।

पिस्सू ने जवाब दिया—बिना ढूँढ़े कोई चारा नहीं है इसलिए चलो बिल्ली को ही ढूँढ़ें।

इसलिए दोनों बिल्ली को ढूँढ़ने निकले।

जब बिल्ली मिल गई तो खटमल उससे बोला—बिल्ली बिल्ली! तुमने चिड़िया के बच्चे खाना छोड़ दिये इसलिए अफ़-सानी तुम्हारा भला करे। क्योंकि तब चिड़िया ने बलूत की जड़ें खोदना बन्द कर दीं और बलूत ने सूअर को चिलगोजे दिये। उन्हें खाकर सूअर ने पिस्सू को अपना बाल दिया और पिस्सू ने मुझे पानी से बाहर निकाला।

बिल्ली ने अपनी मूछों को तनतनाकर जम्हाई ली और खटमल से बोली—जब मुझे पेट भर दूध पीने को मिल गया तो मैं चिड़िया के बच्चों को क्यों खाती? जब गाय ने मुझे दूध दिया तो मैंने चिड़िया का घोंसला ताकना बन्द किया। उसके बाद चिड़िया ने बलूत की जड़ें खोदना छोड़ीं और बलूत ने सूअर को चिलगोजे दिये। उन चिलगोजों को खाकर सूअर ने अपना बाल दिया और पिस्सू ने तुम्हें डूबने से बचाया। इस-लिए तुम्हें गाय को धन्यवाद देना चाहिये।

'अच्छी बात है। और खटमल भागा-भागा गाय के पास पहुँचा।'

खटमल बालू और कङ्कड़ों पत्थरों पर होकर दौड़ चला और पिस्सू उसके पीछे-पीछे फुदकता हुआ चला। वे कितनी देर तक इस तरह दौड़ते रहे यह बतलाना तो मुश्किल है। आखिर में वे एक चरागाह में पहुँचे, जिसमें गाय चर रही थी। खटमल और पिस्सू गाय के पास दौड़े गये। गाय के पास पहुँच कर पिस्सू अपने पिछले पाँवों पर खड़ा हो गया और अपनी गर्दन तानकर बोला—ओ गैया, यदि तू मेरी मदद न करती तो मैं नदी में डूब जाता! दुनिया भर में तुम सबसे ज्यादा दयालु हो। तुमने बिल्ली को दूध दिया। बिल्ली ने दूध पीकर चिड़िया के बच्चों को खाना छोड़ा। तब चिड़िया ने बलूत की जड़ें खोदना बन्द कीं। बलूत ने बहुत से चिलगोजे दिये। उन्हें खाकर सूअर ने पिस्सू को अपना बाल दिया। पिस्सू ने उस बाल से मुझे बचाया। मेरी जान बचाने में मदद करने के लिए भगवान तुम्हारी लम्बी उम्र करे।

गाय अपनी गर्दन लम्बा कर रैंभाई और खटमल से बोली—अच्छे काम के लिए मैं भला अपना दूध देने से क्यों

इन्कार करती ! जब मैंने सुना कि तुम मुसीबत में हो तो मुझे दया आगई और मैंने बिल्ली को थोड़ा-सा दूध दे दिया। बिल्ली ने भरपेट दूध पिया तो उसने चिड़िया के बच्चों को खाना छोड़ दिया। चिड़िया के बच्चे बच गये तो उसने बलूत की जड़े खोदना बन्द कर दीं। बलूत की जड़ बच गईं तो उसने बहुत से चिलगोजे दिये सूअर को भरपेट चिलगोजे खाने को मिले तो उसने अपना बाल पिस्सू को दे दिया। पिस्सू को बाल मिल गया तो उसने तुम्हारी जान बचाई। लेकिन अगर ग्वाला मुझे घास नहीं चराता तो मैं बिल्ली को दूध कहां से देती ? इसलिए अच्छा हो कि तुम ग्वाले को धन्यवाद दो।

खटमल बोला—बात तो तुमने सही कही। चलो दोस्त, ग्वाले के पास चला जाय।

पिस्सू बोला-अच्छी बात है, चलो।

अब पिस्सू और खटमल ने ग्वाले के घर का रास्ता पकड़ा वे भूखे-प्यासे और थके हुए खटमल, पिस्सू बिना वक्त गंवाये भागे-भागे ग्वाले के पास पहुँचे। आगे चलने पर एक पहाड़ी आदमी उन्हें अपनी झोंपड़ी के आगे सोया हुआ मिला। वह बड़े जोर के साथ खर्राटे ले रहा था।

खटमल और पिस्सू ने आपस में सलाह की कि हो न हो यही आदमी ग्वाला होना चाहिये। उसके पास पहुँच कर उन्हों ने कहा-हम आपको नमस्कार करते हैं।

लेकिन पहाड़ी कुछ न बोला। वह उसी तरह जोर-जोर से खर्राटे लेता रहा।

इस पर खटमल ने अपने फेफड़ों की पूरी ताकत लगाकर आवाज दी-ओ भले आदमी, तुमने गाय को हरी-हरी घास चराई। गाय ने बिल्ली को दूध दिया। बिल्ली ने दूध पीकर चिड़ि-

या के बच्चों को खाना छोड़ दिया। चिड़िया के बच्चे बच गये तो उसने बलूत की जड़ें खोदना बन्द कर दिया। बलूत ने बहुत चिलगोजे दिये। सूअर ने उन चिलगोजों को खाकर मेरे पड़ौसी पिस्सू को अपना एक बाल दिया। मेरे पड़ौसी पिस्सू ने उस बाल से मेरी जान बचाई। मेरी जान बचाने के काम में तुमने जो मदद की उसके लिए मैं और पिस्सू तुम्हें धन्यवाद देने आये हैं। भगवान तुम्हारा भला करे और तुम भले चंगे रहो।

यह कह कर खटमल खड़ा हो गया और जवाब की प्रतीक्षा करने लगा। पिस्सू भी उसके पास खड़ा रहकर आदमी के जवाब की प्रतीक्षा करने लगा।

खटमल ने सोचा, यदि मैं खाँसू तो मुमकिन है कि वह उठ जाय। और वह ज़ोर से खाँसने लगा। पिस्सू ने सुना तो वह भी खाँसने लगा।

यह किसे पता कि खटमल और पिस्सू कितनी देर तक इन्तज़ार करते रहे और कितनी ज़ोर से कब तक खाँसते रहे ? आखिर में थककर खटमल ने पिस्सू से कहा—पिस्सू दादा, मालूम होता है कि ग्वाला हम से बात करना नहीं चाहता।

खटमल के मुँह से यह बात निकली ही थी कि ग्वाले ने झट करवट बदली और खटमल तथा पिस्सू उसके नीचे दब गये। दोनों की हड्डियाँ चरमरा उठीं और आँखों के आगे अन्धेरा छा गया।

किसी तरह निकल कर वे दूब पर आये और एक दूसरे की चोटें देखने लगे। खटमल का तो एक पाँव टूट गया था और पिस्सू की पूरी टाँग नदारद होगई थी।

अब पिस्सू और खटमल दोनों जोर-जोर से रोने और

आँसू बहाने लगे। उन्हें दर्द के मारे रोना आरहा था और गुस्से के मारे भी रोना आरहा था।

खटमल ने रोते हुए कहा—मैं वैसे ही अभागा हूँ। अब एक पाँव और टूट गया। हाय राम, मैं बिना पाँव के कैसे गुजर करूँगा?

पिस्सू ने भी रोते और काँखते हुए कहा—ओ अफसानी, तूने मुझे यह सजा क्यों दी? मैंने ऐसा कौन-सा पाप किया था? एक टाँग खोकर मैं अब कैसे फुदकूँगा?

खटमल और पिस्सू रोते ही रहे। पता नहीं वे कितना रोये और कितने आँसू बहाये! आखिर उन्हें ज़ोरों की भूख लगी। तब कहीं रोना-धोना बन्द हुआ! पिस्सू ने खटमल से कहा—खटमल भैया, अब यह बतलाओ कि हम लँगड़े-लूले कहाँ जायँ? हमें खाना-पीना कहाँ मिलेगा?

यह सुन खटमल बड़ी देर तक सोचता रहा। उसने दूब पर अपने आँसू पोंछे और गहरी साँस लेकर बोला—तुम्हारी एक टाँग टूट गई है और मेरा एक पाँव। इस बदमाश ग्वाले ने ही हमारी यह हालत की है। इसी के साथ क्यों न रहा जाय और क्यों न इससे अपने नुकसान का मुआवजा वसूल किया जाय? सारी दुनिया की खाक छानने पर भी हमें इस ग्वाले से ज्यादा ग़रीब आदमी और कोई नहीं मिलेगा। बोलो, क्या राय है?

पिस्सू ने खुशी से फुदकते हुए कहा—वाह, उस्ताद! क्या कहने हैं! बात तो तुमने लाख रुपए की कही है। इस बदमाश ग्वाले ने ही हमारी हड्डियाँ तोड़ी हैं, इसलिए इसीका खून चूसकर जिन्दगी बिताई जाय।

इसलिए खटमल और पिस्सू ने उस ग्वाले पर रहने और उसका खून पीकर दिन बिताने का निश्चय किया। वे दोनों उसके कपड़ों में जा छिपे और अपना खाना-पीना शुरू कर दिया। और गुजारे का जुगाड़ लगते ही उन दोनों को इतनी खुशी हुई, इतनी खुशी हुई कि वे अपनी चोटों को भी भूल गये।

लेकिन वह खटमल और पिस्सू उस ग्वाले पर कितने दिन रहे यह मैं बिलकुल नहीं बतला सकता क्योंकि इसके बारे में मुझे कुछ भी मालूम नहीं

भेड़िया और लोमड़ी

जब मालिक की सख्तियाँ असहनीय हो गईं तो एक ऊँट जङ्गल में भाग आया। हालाँ कि जाड़े की मौसम पास आरही थी; परन्तु मालिक के अत्याचारों के बदले ऊँट ने जङ्गल में जाड़े की तकलीफों को ज्यादा अच्छा समझा।

एक दिन उसकी भेंट लोमड़ी से हो गई। लोमड़ी ने कहा—ऊँट भाई, भगवान तुम्हारे सिर को सलामत रखे। कहो, जङ्गल में कहाँ घूम रहे हो?

'लोमड़ी बहिन, भगवान करे और तुम्हारे लिए भेड़ों की कमी न हो! मैंने अपने मालिक से नाता तोड़ लिया है और आजकल अपने खाने पीने का खुद ही प्रबन्ध कर रहा हूँ।'

'वाह मैं भी आजकल इसी फिराक में हूँ। चलो, एक से दो भले।'

दोनो साथ हो लिये। आगे चलने पर उन्हें एक कबर-

बिज्जू मिला। वह भी उनके साथ हो लिया। और बाद में एक भेड़िया भी उनसे आ मिला।

जाड़ा बिताने को वे पहाड़ों की कन्दराओं में चले गये। उनके वहाँ पहुँचते ही बरफ गिरने लगी। पाला शुरू हो गया और चारों साथियों के खाने के लाले पड़ने लगे। तब लोमड़ी ने भेड़िये और बिज्जू से कहा—दास्तो, ऊँट को खाये बिना और कोई चारा नहीं दीखता।

भेड़िया बोला-विचार तो बुरा नहीं है। लेकिन उसे मारा कैसे जाय? देखती हो न कि वह कितना बड़ा और बलवान है?

लोमड़ी बोली—तुम्हें तो सब कहीं पहलवानी सूझती है। अकल भी कोई चीज़ है या नहीं। देखो, मैं सब काम कितनी सफाई से करती हूँ। बस, तुम देखते रहना और मैं जैसा कहूँ किये जाना हिलना-डुलना मत। जैसे ही मैं कहूँ भेड़िया, जी, जा तुम एक दम उठ खड़े होना।

भेड़िया राजी होगया। लोमड़ी ऊँट के पास जाकर बोली कयों ऊँट दादा, तबियत कैसी है? मुझे बीमार-से लग रहे हो!

'क्या बताऊँ बहिन, यह सर्दी बिताना मुश्किल दीख रही है। मैं तो भूख के मारे मर जाऊँगा।'

'हाँ दीखता तो ऐसा ही है। लेकिन हम जंगल के जानवर जाड़े-पाले की जरा भी पर्वाह नहीं करते। उधर देखो, वह भेड़िया पड़ा है। मर गया है। जाड़े भर इसी तरह मुर्दा पड़ा रहेगा। बसन्त आते ही मैं उसे बहते पानी में फेंक दूँगी और वह जी जायगा। जाड़े भर उसे खाने-पीने की जरुरत नहीं।'

ऊँट ने पूछा—सच कह रही हो?

'तो क्या मैं तुमसे झूठ बोलती हूँ यदि झूठ बोलती हूँ तो

और हाथ-पाँव गल जायें। तुम्हें विश्वास न होता हो तो अभी देख लो। मैं उसे सोते के पानी में फेंक कर जिलाये देती हूँ। सोते के पानी में अमृत है और वह मुर्दों को भी जिला देता है।'

यह कहकर लोमड़ी ने भेड़िये को उठा कर सोते के पानी में फेंक दिया और बोली-भेड़िया, जी उठ। और भेड़िया जी गया।

लोमड़ी ने कहा—बोलो, क्या कहते हो? तुम्हें भी मार डालें? जाड़े भर मुर्दा बने रहना। नयी घास उगते ही मैं तुम्हें जीवित कर दूँगी। भूख से तिल-तिलकर मरने के बदले यह कहीं अच्छा रहेगा।

ऊँट ने उसकी बात पर काफी सोच-विचार किया और अन्त में राज़ी हो गया।

वह बोला—अच्छी बात है। मार डालो, लेकिन चट-पट मारना।

उन तीनों ने मिलकर ऊँट को मार डाला। उसकी चमड़ी उधेड़ कर गोश्त के टुकड़े किये गये। फिर लोमड़ी और बिज्जू ऊँट का सिर और अँतड़ियाँ लेकर नदी पर धोने के लिए गये। धोते-धोते लोमड़ी ने बिज्जू से कहा—मैं तो खाना चाहती हूँ। आओ, बिज्जू बहिन, इसमें से थोड़ा-सा खा लें।

पर भेड़िया नाराज़ होगा। उसने सब टुकड़े गिन लिये थे।

'उसकी चिन्ता मत करो। मैं उससे समझ लूँगी। तुम सिर्फ इतना करना कि जब वह सवाल पूछने लगे तो मेरी ओर ताकना।'

लोमड़ी और बिज्जू ने ऊँट का दिमाग और दिल वहीं खा लिया और बाक़ी बचे टुकड़े लेकर भेड़िया के पास पहुँचीं। भेड़िया ने दो टुकड़े कम देखे तो मारे गुस्से के आग—बबूला हो गया।

वह चिल्लाया—अरे लुटेरो, दिमाग़ का गूदा कहाँ है?—

बिज्जू लोमड़ी की ओर देखने लगी और लोमड़ी ने जवाब दिया—

'ज़रा इसकी अक़ल तो देखो! आप ऊँट का दिमाग़ माँग रहे हैं! अरे भले मानस, ऊँट के दिमाग़ ही होता तो वह तुम्हारे फन्दे में फँसकर मरता ही क्यों?'

इसपर भेड़िये ने कहा—अच्छी बात है, दिमाग़ नहीं तो न सही, पर उसका दिल कहाँ है?

बिज्जू ने फिर लोमड़ी की ओर देखा।

और लोमड़ी ने बिज्जू से कहा—वाह, बिज्जू बहिन! दिल खाते समय तो तुमने मेरी ओर देखा तक नहीं; अब मेरी ओर क्यों देख रही हो?

यह सुनते ही भेड़िया बिज्जू पर लपका और बिज्जू हवा से बातें करने लगी। भेड़िया ने उसका बहुत पीछा किया लेकिन पकड़ न सका तो झुँझलाता हुआ लौट आया। तब तक सब माँस गायब हो चुका था; क्योंकि भेड़िये की अनुपस्थिति में लोमड़ी ने ऊँट के माँस का एक-एक टुकड़ा अपनी माँद में ले जाकर छिपा दिया था।

'माँस कहाँ है?'

'कौन-सा माँस?'

'कौन-सा माँस! अरे हम चार जने थे या नहीं?'

'थे क्यों नहीं। चारों साथ ही तो रहते थे।'

'चार में से ऊँट को तो हमने मार डाला और बिज्जू भाग गई है?'

'हाँ, बिज्जू भाग गई।'

'तो, ऊँट का माँस कहाँ गया?'

'कैसा माँस? तुमने पूछा—बिज्जू भाग गई या नहीं? और मैंने जवाब दिया—हाँ भाग गई। और तुम फिर माँस की बात ले बैठे।'

'हुँ ह, तुम्हारे सिर में तो गोबर भरा है, गोबर।' भेड़िये ने गुस्सा होकर कहा और फिर लोमड़ी से सवाल पूछने लगा।

और सब सवालों का जवाब तो लोमड़ी ठीक से देती थी; लेकिन माँस की बात आते ही सब कुछ भूल जाती थी और ऐसा जतलाती थी मानों वह इस सम्बन्ध में कुछ समझती ही न हो।

भेड़िये ने उसके साथ बहुत सिर खपाया। वह बोला—देख, लोमड़ी, तू मेरी आँखों में धूल झोंक रही है। सीधे से बतलादे, नहीं तो मैं तुझे मार ही डालूँगा।

यह सुनते ही लोमड़ी झट से अपनी माँद में जा छिपी। भेड़िया बाहर जमकर बैठ गया और बोला—चाहे मर ही क्यों न जाऊँ, पर अब तुझे छोड़ने का नहीं। कभी तो बाहर निकलेगी। तू निकली और मैंने दबोचा। मुझे बेवकूफ बना रही है। यह देख, तेरी माँद से ऊँट के ताजे माँस की गन्ध आ रही है।

लोमड़ी ने अपनी माँद से ज़रा-सा झाँककर देखा तो पास ही उसे एक घोड़ा दिखलाई दिया। वह ज़रूर अपने झुण्ड से भटक गया था।

लोमड़ी ने कहा—भेड़िया दादा, कहते हैं कि चूहे से डरने वाले शेर का शिकार करने की डींग हाँका करते हैं। यह कहावत तुम पर भी लागू होती है। मुझ से पार पाना तुम्हारे बस का नहीं है, इतना समझ लो। फिर क्यों झगड़ा मोल लेते हो! उधर देखो! एक घोड़ा आ रहा है। सपने में तुमने ऊँट का

माँस देखा था। उसी के बदले में भगवान ने वह घोड़ा भेज दिया है। चलो, उसी को मार कर खाया जाय।'

एक तो भेड़िया बाहर बैठे-बैठे थक गया था और दूसरे उसके पेट में चूहे कूद रहे थे। इसलिए वह राज़ी हो गया। लोमड़ी के लिए रास्ता करने को वह माँद से ज़रा दूर हट कर खड़ा हो गया। इस बीच घोड़ा उनके बिलकुल पास आ गया था। लोमड़ी ने माँद से बाहर आकर घोड़े से कहा—राम-राम, घोड़ा भाई! सुनते हैं कि जाड़ों में पहाड़ पर बर्फ़ जम जाती है और गर्मियों में नदियों में बाढ़ आ जाती है। क्या तुम भूखे मर रहे हो?

'हाँ' लोमड़ी बहिन! अपने झुण्ड से भटक गया हूँ। और भूखा मर रहा हूँ।'

'हम भी भूखे मर रहे हैं, भैया! और ऐसा लगता है कि तीन में से एक को खाकर ही हम जी सकेंगे।'

भेड़िया ने लोमड़ी के कान में कहा—क्या व्यर्थ की गपशप लड़ा रही है उससे? हमला बोलकर क्यों न चटपट उसका काम तमाम कर दिया जाय?

'अक्ल से तो तेरा सात जन्म का बैर है। हमला करके उसे मारना कुछ हँसी-मज़ाक है? वह भाग नहीं जायगा? उसे स्वेच्छा से मरने के लिए राज़ी करना होगा। मैं कोशिश करती हूँ। देखो, घोड़ा भाई! जब तीन में से एक को मरना ही है तो ऐसा क्यों न किया जाय कि जो हममें सबसे छोटा हो वही मरे।'

घोड़ा और भेड़िया राज़ी हो गये।

भेड़िया बोला—मैं ही तुम दोनों से ज्यादा बूढ़ा हूँ। नोह का जमाना मुझे अभी भी अच्छी तरह याद है। उन दिनों मैं

जवान था। जब वोह मर गया तो उसके बेटे आपस में झगड़ने लगे। मैंने ही उनमें समझौता कराया था।

यह सुन लोमड़ी रोने लगी और बोली—भेड़िया दादा, भगवान के लिए मुझे उस लड़ाई की याद मत दिलाओ। मेरे पोते उसी लड़ाई में काम आये थे। वे खुद अधेड़ थे और पीछे अपने बेटों को छोड़ गये थे। मुझ बुढ़िया को अपने उन पर-पोतों का लालन-पालन करना पड़ा था।

तब तो घोड़ा बोला—हो न हो मैं ही तुम दोनों में ज्यादा बूढ़ा हूँ। मुझे साल तो याद नहीं रहे क्योंकि पढ़ना-लिखना नहीं जानता हूँ। पर मेरे पहले मालिक ने मेरे पिछले खुरों पर मेरा नाम और मेरी उम्र खुदवा दी थी।

लोमड़ी बोली—यह ज़रूर झूठ बोल रहा है। हमसे ज्यादा बूढ़ा यह कभी नहीं हो सकता। भेड़िया दादा, ज़रा इसके खुरों पर की लिखावट तो पढो। मैं खुद ही पढ़ती लेकिन बुढ़ापे के कारण आँखें काम नहीं करतीं।

मूर्ख भेड़िया जैसे ही घोड़े के पिछले पाँवों के पास पहुँचा घोड़े ने कसकर ऐसी दुलत्ती जमाई कि भेड़िये का दम ही निकल गया। लोट-पोट होता हुआ वह दस हाथ दूर जा गिरा। जबान निकल आई और पाँव तड़फड़ा कर ठण्डा हो गया।

लोमड़ी बोली—घोड़े भाई, लाख-लाख धन्यवाद। भेड़िया बच जाता तो तुम्हारी और मेरी बोटियों का भी पता न चलता।

इतना कहकर ऊँट का माँस खाने के लिए लोमड़ी तो अपनी माँद में चली गई और घोड़ा भी घूमता हुआ अपने झुण्ड से जा मिला।

दयालू उमर

बहुत पुरानी बात है। एक माँ थी और उसके एक बेटा था। उसका नाम उमर था। माँ-बेटे बहुत ही गरीब थे।

उमर जंगल जाता। लकड़ी बटोर लाता। दो पैसे में उसे बेच आता। एक पैसे की रोटी लेता; एक पैसे की भाजी लेता और दोनो माँ बेटे खा-पी कर दिन बिताते थे।

एक दिन उमर लकड़ी बेचकर लौट रहा था। रास्ते में उसने लड़कों का एक झुँड देखा। वे बल्ली के एक बच्चे को परेशान कर रहे थे।

उमर ने उनसे कहा—लो, एक पैसा ले लो। इसकी मिठाई लकर खाना। बिल्ली का बच्चा मुझे दे दो।

बच्चे खुशी-खुशी राजी हो गये। उमर ने बच्चे को गोद में उठा लिया। रास्ते में उसने सोचा—एक दिन सूखी रोटी ही खा लेंगे। बिना तरकारी के ही आज का दिन निकाल लेंगे।

घर लौटा तो माँ ने उसकी प्रशँसा की। फिर रोटी के तीन हिस्से किये। एक माँ ने खाया, दूसरा उमर को दिया और तीसरा बिल्ली के बच्चे को।

दूसरे दिन उमर फिर जँगल गया। लकड़ी तोड़कर लाया। बाजार में दो पैसे में बेचकर एक पैसे की रोटी खरीदी। वह भाजी खरीदने जा ही रहा था कि उसे कुछ लड़के मिले। वे एक कुत्ते के गले मे रस्सी बाँधकर उसे खींच रहे थे।

उमर को कुत्ते पर दया आगई। उसने पैसा देकर उस पिल्ले को ले लिया। घर जाकर धीरे से पिल्ले को जमीन पर उतारा। जब वह भौंका तो माँ ने सुना और पूछा—क्यों बेटा, पिल्ले को तुम

लाये हो?'

हाँ माँ, आज भी हमें खाली रोटी ही खाना होगी।'

कोइ हर्ज नहीं बेटा, कई लोगों को तो रोटी भी नहीं मिलती है।

उस दिन उमर की माँ ने रोटी के चार हिस्से किये। एक खुद लिया, एक उमर को दिया, एक बिल्ली के बच्चे को और एक पिल्ले को।

तीसरे दिन सबेरे उमर फिर जङ्गल गया। लकड़ी बटोर कर दो पैसे में बेची। एक पैसे की रोटी लेकर वह भाजी की दुकान पर जा रहा था। रास्ते में उसे बच्चों का एक झुण्ड मिला। एक लड़के के हाथ में लम्बा सा बाँस था और बाँस की चीपट में एक साँप लिपटा हुआ था।

उमर ने पूछा--इस साँप का क्या करोगे?

'जला देंगे और क्या करेंगे?'

उमर को दया आ गई और पैसा देकर बच्चों से साँप ले लिया।

उस दिन माँ ने रोटी के पाँच हिस्से किय और खा-पीकर सब सो गये।

दूसरे दिन सबेरे रोज की तरह उमर जङ्गल के लिए रवाना हुआ। साँप भी उसके पीछे-पीछे रेंगने लगा और बोला—उमर मुझे भी अपने साथ ले चलो। मैं वहाँ तुम्हारे काम आऊँगा।

उमर ने साँप को उठाकर जेब में रख लियाँ। जङ्गल में पहुँचने के बाद साँप ने उससे पूछा-- क्यों उमर, तुम डरोगे तो नहीं?

उमर बोला—डर किसे कहते हैं, मैं जानता ही नहीं।

'अच्छा तो मेरे पीछे-पीछे चले आओ।' यह कहकर साँप जेब से बाहर निकल आया और एक पगडण्डी पर रेंगने लगा।

काफी तेज़ी से चलने के बाद साँप एक चारागाह में आकर रुक गया। और उमर से बोला—तुमने मेरी जान बचाई है। मैं तुम्हें इसका बदला देना चाहता हूँ। मेरा पिता साँपों का राजा नागराज है। अभी बहुत से साँप यहाँ इकट्ठा होंगे। तुम डरना मत। कोई तुम्हें छुवेगा तक नहीं। मेरे पिता नागराज आकर तुमसे कहेंगे कि इसे छोड़ दो। पर तुम मुझे छोड़ना मत। अगर वह सोना दें तो उसे भी मत लेना। उनसे वह मणि माँगना जो उनके मुँह में है। वह मणि चमत्कारिक है। उसे चिन्तामणि कहते हैं। उसे मुँह में रखकर जो इच्छा करोगे तुरत पूरी हो जायगी। मेरी बात भूल मत जाना।

यह कहकर साँप ने फुफकारना शुरू किया। चारों ओर से साँपों के फुफकारने की आवाज़ आने लगी और देखते ही देखते सारा चरागाह साँपों से भर गया।

थोड़ी देर बाद चाँदी की एक घण्टी के टुनटुनाने की आवाज़ आई। साँप इधर-उधर हटकर अदब से खड़े होगये। काले स्याह सात नागों के रथ पर बैठकर नागराज की सवारी आई। उनके गले में चाँदी की एक छोटी-सी घण्टी बँधी थी; जो उनके आगमन की सूचना देने के लिए थी। नागराज बहुत बूढ़े थे। उनकी ज़ुल्फें सफेद होगई थीं। उमर ने धरती तक झुककर नागराज को प्रणाम किया।

उमर को आशीर्वाद देकर नागराज बोले—ऐ दयालु उमर, तूने मेरी इकलौती बेटी की जान बचाई है। बोल, क्या चाहता है?

'नागराज, अगर आप मुझ पर खुश हैं तो अपने मुँह की मणि दीजिये।'

'मणि लेकर तुम क्या करोगे? मेरे खज़ाने में एक से एक अनमोल हीरे-जवाहरात हैं। जो चाहो और जितने चाहो ले लो।'

'नहीं नागराज, मुझे तो सिर्फ आपके मुँह की मणि चाहिये।'

'अच्छी बात है। यह लो।' इतना कहकर नागराज ने उसको अपने मुँह की मणि दे दी और बोले—देखो उमर, इस मणि को अपनी आँख की पुतली समझना और इसकी रक्षा करना। तुम्हारे कई दुश्मन खड़े होजाएँगे और तुमसे यह मणि लेना चाहेंगे। सावधान रहना।

उमर ने एक बार फिर नागराज को प्रणाम किया और मणि को मुँह में रखकर घर की ओर रवाना हुआ। चलते-चलते उसके पाँव दुखने लगे। वह एक ठोंक पर बैठ गया और मन ही मन बोला—क्या ही अच्छा हो कि मैं घर भूसे के बिस्तरे पर पहुंच जाऊँ।

बस पलक मारने की देर थी और उसने अपने आपको अपनी झोपड़ी में भूसे के एक गुदगुदे बिस्तरे पर पाया।

यह देख उमर की खुशी का ठिकाना न रहा।

उमर को आया जान उसकी माँ ने पूछा—क्यों बेटा, आज इतनी देर कहाँ लगा दी? मारे भूख के मेरा तो दम निकला जा रहा है। बेचारे जानवर भी भूख से तड़फ रहे हैं।

उमर ने प्रसन्न होकर कहा—अम्माँ, आज मेरी तक़दीर खुल गई है। अब खाने-पीने की कमी नहीं रहेगी। बोलो माँ, तुम दुनियाँ की कौनसी न्यामत चाहती हो?

'बस, एक बार भर पेट खाना मिल जाय, बेटा।'

'और क्या चाहती हो ?'

'और जिन्दगी में सिर्फ एक बार रेशम पहिनने को मिल जाय।'

उमर बाहर निकल आया और मणि मुँह में रखकर बोला—मेरे और मेरी माँ के लिए स्वादिष्ट भोजन और बढ़िया कपड़े चाहियें।

और पलक मारते दोनों चीजें उसके सामने आगईं।

उमर ने कपड़े बगल में दबा लिये। भोजन का थाल लेकर माँ के पास भीतर गया और बोला—लो माँ, खाना खाओ।

माँ ने थोड़ा-थोड़ा सब खाया और पेट भर जाने पर कुत्ते और बिल्ली को खिला दिया।

इसके बाद बुढ़िया ने रेशमी कपड़े पहिने और उन पर हाथ फेरती हुई दुःखित स्वर में बोली—अगर मैं अपने आपको रेशमी कपड़े पहिने हुए देख सकती तो कितना अच्छा होता ?

उमर ने मणि मुँह में रखकर कहा—मेरी माँ देखने लग जाय।

और तत्काल उसकी माँ की आँखें खुल गईं। बुढ़िया देखने लगी। वह चिल्ला पड़ी—ओ मेरे राम! मैं तो देखने लग गई हूँ। सब चीजें देख सकती हूँ। बेटा, तुझे, इन कपड़ों को और अपने हाथ-पाँव तक देख रही हूँ।

'अच्छा माँ, अब जाकर खान से कहो कि वह अपनी बड़ी बेटी की शादी मेरे साथ करदे।'

'क्या पागलपन की बात करता है? बेटा! वह मुझे जीता नहीं छोड़ेगा। अपने कुत्तों से नुचवा डालेगा।'

'डरो मत माँ, हिम्मत से काम लेना और सीधे महल में चली जाना।'

जब बुढ़िया उसके सामने लाई गई तो खान अपने सोने के तख्त पर शान से बैठा हुआ था। उसने रोब से पूछा—क्यों आई है ?

'मेरा बेटा तेरी बड़ी बेटी के साथ शादी करना चाहता है। हम मुँह माँगा हुण्डा देने के लिए तैयार हैं।'

खान ने बुढ़िया की मजाक उड़ाने के इरादे से कहा—अगर कल सुबह तक उस सामने वाली पहाड़ी पर मेरे महल से दस गुना शानदार महल तेरा बेटा बना देगा तो मैं अपनी शाहजादी का विवाह उसके साथ कर दूँगा।

बुढ़िया घर लौट आई और सारी बात अपने बेटे को कह सुनाई।

'अच्छा माँ, तुम सो जाओ। कल सवेरे तुम्हें जल्दी उठना पड़ेगा। क्योंकि कल शाम को मेरी शादी है।'

बुढ़िया सो गई। जब अँधेरा हो गया तो उमर ने मणि मुँह में रखकर कहा—मैं चाहता हूँ कि इस पहाड़ी पर खान के महल से दसगुना ज्यादा शानदार महल बन जाय और मैं और मेरी माँ कल सवेरे उसी महल में सोकर उठें।

जब दूसरे दिन सवेरा हुआ और बुढ़िया जागी तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। वह एक गुदगुदे मुलायम बिस्तरे पर सोई हुई थी। रेशम की तो लिहाफ थी, मखमल के तकिये थे और जमीन पर नीले रँग की बढ़िया क़ालीन बिछी थी।

उठकर उसने अपने बेटे को जगाया और दोनों खान के महल पर गये।

शाम को बड़ी धूम धाम से शादी की दावत हुई। उमर और उसकी पत्नी सुख चैन से अपने नये महल में रहने लगे। उमर ने अपनी माँ से बहुत आग्रह किया लेकिन वह बुढ़िया अपनी झोंपड़ी छोड़कर उनके साथ महल में रहने नहीं आई।

एक दिन उमर जँगल में शिकार खेलने गया था। उसकी पत्नी जुबैदा अकेली झरोखे में बैठी थी। जब उसका मन नहीं लगा तो उसने अपनी सखी गैना को बुला भेजा। सहेली के खाने-पीने का इन्तजाम करने के बाद जुबैदा बोली—मुझे मेरे पति बहुत प्यार करते हैं। कभी मेरी कोई इच्छा टालते नहीं।

गैना ने कुटिलतापूर्वक मुस्कराते हुए कहा—तो ज़रा उन से यह तो पूछना कि उन्होंने रातोंरात यह महल कैसे खड़ा कर लिया? मेरा विश्वास है कि यह बात वह तुम्हें हर्गिज नहीं बतलाएँगे।

जुबैदा ने ज़ोर देकर कहा—आज ही लो। मैं रात में ही पता लगा लूँगी।

शाम को उमर जब शिकार से लौटा तो जुबैदा ने उसे बड़े प्यार से पूछा—प्यारे यह तो बतलाओ कि तुमने रातोंरात ऐसा आलीशान महल कैसे बना डाला?

इस पर उमर ने उसे चिन्तामणि का सारा हाल कह सुनाया।

दूसरे दिन जैसे ही उमर शिकार पर गया। जुबैदा ने गैना को बुलाकर सारी हकीकत कह सुनाई।

गैना को बड़ी ईर्षा हुई और वह बोली—अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो मणि माँग लेती। पता नहीं, वह कहीं गिरादें या कोई उसे चुरा ही ले जाय, तब तुम्हारा क्या होगा?

भोली जुबेदा उसके बहकावे में आ गई और बोली—सच कहती हो।

जब उमर शिकार से लौट कर आया तो जुबेदा ने उससे मणि माँगी। वह बोली—तुम रोज-रोज जँगल में शिकार खेलने जाते हो। बुरा वक्त कहकर नहीं आता। मान लो, कहीं गिरा बैठो। या तुम्हारे दुश्मनों को हो इसका पता लग जाय और वे चुरा ले जांय। ना भैया, मैं तुम्हें इसे साथ लेकर फिरने नहीं दूँगी। लाओ, मुझे दे दो। मैं सात तालों में बन्द कर हिफाजत से रखूँगी।

तिरिया हठ मशहूर है। पहले तो उमर ने उसे बहुत समझाया लेकिन जब जुबेदा ने अपनी हठ नहीं छोड़ी तो उसने मणि उसके हवाले कर दी। सबेरा होते ही उमर तो शिकार के लिए रवाना हुआ। उधर जुबेदा ने मणि मुँह में रखकर कहा—मैं चाहती हूँ कि मेरी सहेली गैना अभी आ जाय।

बात मुँह से निकलने की देर थी। दरवाज़ा खुला और गैना ने अन्दर आकर जुबेदा को सलाम किया।

जुबेदा ने खुशी से तालियाँ पीटकर कहा—लो गैना, इस अनोखी मणि को देखो। बिलकुल लाल का टुकड़ा मालुम पड़ती है।

गैना ने मणि जुबेदा के हाथ से लेकर अपने मुँह में रख ली।

जुबेदा ने घबराकर कहा—अरे-अरे! यह क्या करती हो?

लेकिन उसी समय गैना ने ईर्षा से जलकर कहा—मैं चाहती हूँ कि तुम मेंढकी बन जाओ। और यह महल मुझे लेकर समन्दर के उस पार उड़ जाय।

बस, बात कहने की देर थी कि अप्सरा-सी सुन्दरी जुबेदा मेंढकी बन गई और महल उड़कर समन्दर के उस पार पहुँच गया।

शाम को उमर शिकार से लौटा तो महल का पता नहीं था। महल की जगह गहरा दलदल हो रहा था। उमर को पहले तो अपनी आँखों पर ही भरोसा नहीं हुआ। वह दलदल के पास गया तो एक गन्दी मेंढकी फुदकती हुई उसके निकट आई। उमर ने लात मारकर मेंढकी को दलदल में गिरा दिया और उदास होकर अपनी माँ के पास लौट आया। झोंपड़ी के दरवाज़े पर कुत्ते ने क्यांऊँ-क्यांऊँ कर उसका स्वागत किया और बिल्ली का बच्चा उछलकर उसकी गोद में चढ़ गया।

उमर ने अपनी माँ को सारा हाल कह सुनाया और फूट-फूट कर रोने लगा।

तब बिल्ली का बच्चा बोला—ए नेक दिल उमर, अफसोस मत कर। हम तेरी मदद करेंगे।

जब उमर सो गया तो कुत्ता और बिल्ली समन्दर के किनारे पहुँचे। बिल्ली कुत्ते की पीठ पर सवार हो गई और कुत्ता तेज़ी से पानी चीरता हुआ समन्दर में तैरने लगा।

दूसरे किनारे पर पहुँचकर उन्होंने अपना बदन झाड़ा। पानी सुखाकर वे महल के पास तक दौड़ गये।

लेकिन महल के चारों ओर पत्थर का ऊँचा परकोटा था। और दरवाजे पर दर्बो हथियार से लैस पहरेदार खड़ा था। कुत्ते और बिल्ली ने पहरेदारों की आँखें चुराकर अन्दर जाने की बहुत ही कोशिशें की लेकिन हरबार पहरेदारों ने उन्हें मार भगाया।

निराश होकर वे दोनों दूर जा बैठे और रास्ता देखने लग कि किसी तरह अन्धेरा हो जाय। जब रात हो गई तो कुत्ता और बिल्ली फिर दबे पाँवों फाटकों के पास पहुँचे। लेकिन फाटक बन्द हो गये थे और परकोटे पर सन्त्री पहरा दे रहे थे। कुत्ते ने निराश होकर कहा—क्या हमें उमर के पास खाली हाथ ही लौटना होगा?

बिल्ली ने जवाब दिया—निराश होने की जरूरत नहीं है।

थोड़ी देर बाद पास ही कहीं बिल में से एक बड़ा सा चूहा निकला। उसके पीछे एक छोटी सी चुहिया भी निकली। बिल्ली ने चुपचाप झपटकर चुहिया को पकड़ लिया। मोटे चूहे ने देखा तो बिल्ली से प्रार्थना करने लगा—बिल्ली मौसी, मेरी चुहिया छोड़ दो, चाहे मुझे खालो, लेकिन उसे छोड़ दो।

'मैं तो चूहों को छूती तक नहीं। लेकिन इस चुहिया को नहीं छोड़ूँगी। हाँ, तुम मेरा जरा-सा काम कर दो तो छोड़ दूंगी। ज़रा यह पता लगाओ। कि उस पापी नगैना ने मणि कहा रखी है और जहां भी रखी हो लाकर मेरे हवाले कर दो। मैं चुहिया को छोड़ दूंगी। लेकिन तुमने मुझे धोखा दिया तो फिर अपनी जानो। मैं तुम्हारे सारे कुटुंब कबीले को ही चट कर जाऊंगी।

'यह कौन बड़ी बात है, बिल्ली मौसी! गैना मणि को जहां रखती है वह जगह मुझे मालुम है। ठहरो, मैं अभी लेकर आया।' यह कह कर चूहा वहां फिर अपने बिल में घुस गया।

कुत्ता और बिल्ली बिल के पास बैठ कर चूहे का इन्तज़ार करने लगे।

जमीन के अन्दर ही अन्दर चूहा वहाँ पहुंचा जहाँ गैना

सोई हुई थी। वह घूस कर तकिये पर जा बैठा और दुमसे गैना का नाक सहलाने लगा।

गैना को ज़ोर की छींक आई और मणि उसके मुंह से निकल नीचे आ गिरी। चूहे ने मणि उठाली और तीर की तरह एक बिल में घुस गया। वहां से अन्दर ही अन्दर चलता हुआ पर कोठे से बाहर उस जगह पहुंचा, जहां कुत्ता और बिल्ली बैठे उसका रास्ता देख रहे थे। चूहे ने झट से मणि उनको दे दी।

मणि लेकर कुत्ता और बिल्ली पूरी ताकत से समन्दर की तरफ दौड़े और पानी में उतर कर तैरने लगे। उधर गैना को पता चल गया तो उसने उन्हें पकड़ने के लिये एक जहाज भेजा।

बिल्ली ने पीछे मुड़ कर देखा तो उसे एक जहाज तेजी से अपनी ओर आता दिखलाई दिया।

अब क्या करें? कुत्ते ने घबरा कर पूछा।

बिल्ली ने कोई जवाब नहीं दिया। मणि लेकर मुंह में रखी और बोली- मैं चाहती हूं कि समन्दर के उस पार पहुंच जाएँ।

बस, वे समन्दर के उस किनारे पर पहुंच गये, जहां उमर की झोंपड़ी के दरवाजे परही उमर खड़ा था।

थकावट से हांपते हुए बिल्ली ने मणि उमर के हाथ में थमादी। उमर ने मणि मुंह में रख कर कहा- मेरा महल और मेरी पत्नी लौट आयें।

पलक मारते ही दल दल गायब होगई और उसकी जगह महल खड़ा हो गया।

आँसू बहाती हुई जुबेदा महल से बाहर निकली और उसने उमर को गैना के विश्वासघात की कहानी कह सुनाई।

उमर ने कहा- गैना मेंढकी हो जाय और कीचड़ में सड़ती रहे।

फिर उसने अपनी पत्नी को छाती से लगा लिया और हाथ पकड़कर उसे महल के अन्दर ले गया। कुत्ता और बिल्ली भी उसके पीछे-पीछे अन्दर दौड़े गये।

उमर और जुबेदा फिर सुख-चैन से अपने महल में रहने लगे। कुत्ता और बिल्ली का भी वे दोनो हमेशा बहुत खयाल रखते थे।

सुनहरा मच्छ

बड़ी पुरानी बात है। उन दिनों की जब कि तुर्कमानिया में अत्याचारी खानों का बोल-बाला था। उन दिनों समन्दर के किनारे एक बूढ़ा मछुआ और उसका बेटा रहता था। काम करते-करते बूढ़े की कमर दुहरी होगई थी परन्तु फिर भी उसकी गरीबी दूर नहीं हुई। उस बेचारे के पास एक फूटी नाव और टूटी जाल के सिवा और कुछ नहीं था।

लेकिन उसका बेटा तायर बड़ा ही खुशदिल जवान था। उदासी को कभी अपने पास भी नहीं फटकने देता था और दिन भर गीत गाया करता था। उसके गाने इतने मशहूर होगये थे कि दूर-दूर के लोग भी उसे सुनने के लिये आया करते थे।

एक दिन बूढ़े ने समन्दर में जाल फेंका और किनारे पर आकर खींचने लगा। जाल में एक सुनहरा मच्छ आ फँसा था और निकलने के लिये छट पटा रहा था।

बूढ़े को सुनहरा मच्छ देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला—बेटा, मच्छ को एक निगाह देखते रहना। मैं जाकर खान

को यह खुश खबर सुना आता हूँ। वह इसके बदले हमें काफी धन देगा।

बूढ़ा तो चला गया और तायर बैठा मच्छ का तड़पना देखता रहा। देखते-देखते उसका दिल दया से भर आया और उसने मच्छ को फिर समन्दर में फेंक दिया। मच्छ के गोता लगाते ही खान किनारे पर आ पहुँचा। उसके साथ उसके कई मुसाहिब भी थे।

'अच्छा, अब मुझे वह सुनहरा मच्छ दिखलाओ।'

तायर ने झुक कर सलाम किया और बोला—ओ मालिक, मुझे सुनहरे मच्छ पर दया आगई और मैंने उसे समन्दर में छोड़ दिया।

खान ने नाराज़ होकर बूढ़े से कहा—क्यों बे बदमाश, मुझसे मज़ाक करता है? दुनिया में सुनहरा मच्छ होता भी है?

और यह कहकर उसने अपने वज़ीर की ओर देखा, जिसकी डाढ़ी उसके घुटने तक लम्बी थी। वज़ीर ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरकर कहा—बादशाह सलामत, मेरी उम्र सौ साल से भी ज्यादा है लेकिन मैंने अपनी उम्र में कभी ऐसी अनोखी बात नहीं सुनी।

बूढ़े ने हजारों कसमें खाईं और बार-बार कहा कि उसने खुद सुनहरा मच्छ अपनी जाल में फँसाया था; परन्तु खान ने उसकी बात नहीं मानी। उसने मछुए को सजा देने की ठानी। नौकरों को हुक्म देकर तायर के हाथ पाँव बँधवाये और उसे फूटी नाव में डालकर समन्दर में छोड़ दिया।

इसके बाद खान अपने महल को लौट गया। बूढ़ा बाप बेचारा समन्दर के किनारे-किनारे दौड़ने और छाती पीटने

लगा। वह अपने बेटे की मदद करने से बिलकुल लाचार था।

लेकिन नाव डूबी नहीं। हवा उसे बहाती हुई आगे और आगे की ओर ले चली।

काफी देर के बाद एक उजाड़ टापू दिखलाई दिया। तेज़ हवा ने उस फूटी नाव को उजाड़ टापू से जा लगाया। नाव के वहाँ लगते ही झाड़ियों के पीछे से एक जवान आदमी बाहर निकला। वह शकल-सूरत में तायर से बिलकुल मिलता-जुलता था। उसने तायर के बन्धन खोले और उसे खाना-पीना दिया। दोनों की गाढ़ी दोस्ती होगई। वे साथ रहते, साथ मछली मारते और साथ शिकार खेलते थे। जो मिलता आपस में बाँट लेते थे।

एक दिन उन्हें एक बूढ़ा गड़रिया मिला जो अपने आगे भेड़ों का बड़ा-सा रेवड़ हाँककर ले जा रहा था। दोनों मित्रों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। उनका तो यह खयाल था कि टापू बिलकुल उजाड़ है और उस पर उनके सिवा और कोई नहीं रहता है।

पूछने पर बूढ़ा गड़रिया बोला—यहाँ से तीन दिन के रास्ते पर एक खान की रियासत पड़ती है। वह खान बड़ा ही अभागा है। सिर्फ एक बेटी है। खूबसूरत इतनी कि दुनिया में उसके मुक़ाबले और कोई नहीं। पर तक़दीर देखो कि गूँगी है। जनम से अभी तक एक शब्द तक नहीं बोली है। खान ने देश देशांतरों में ढिंढोरा पिटवा रखा है कि जो उसकी बेटी को अच्छा करेगा उस पर वह अपनी बड़ी से बड़ी दौलत निछावर कर देगा। लेकिन असफल होने वाले का सिर धड़ से जुदा कर दिया जायगा। आज दिन तक बीसियों सिर धड़ से जुदा हो चुके हैं और खान की बेटी अभी तक गूँगी ही बनी हुई है।

यह सुन दोनो दोस्तों ने ते किया कि चलकर अपनी किस्मत आजमानी चाहिये।

खान के महल के पास पहुँच कर उस जवान आदमी ने तायर से कहा—ए मेरे दोस्त, पहले मुझे अपनी किस्मत आजमाने दे। अगर मैं सफल होगया तो जो कुछ मिलेगा उसे हम आपस में बाँट लेंगे।

तायर राजी होगया और उस जवान ने महल के फाटक पर पहुँच कर नक्कारे पर डङ्का मारा।

झट दो दासियाँ बाहर निकलीं और उनमें से एक बोली—ए जवान, अपनी जिन्दगी को हराम क्यों करता है? तुझसे पहले कई जवान कोशिश कर चुके हैं पर कोई भी हमारी मालकिन को चङ्गा नहीं कर सका। गाँव के बाहर बागड़ पर उनके सिर टँगे हैं। जाकर देख आ और अपनी जवानी पर रहम खा।

लेकिन वह युवक मुस्कराता हुआ अन्दर पहुँचा और बेधड़क शाहजादी के कमरे में दाखिल होगया और उससे बोला—ए हसीन शहजादी, मेरी बात सुन। हम अपने बाप के तीन बेटे थे। एक दिन हमारे बड़े भाई ने लकड़ी की चिड़िया बनाई। ऐसा लगता था कि वह अभी चहकने और फुदकने लगेगी। मँझले भाई ने जँगल से फूल लाकर चिड़िया को सजाया। मैंने जादू का सोता ढूँढ निकाला और उस चिड़िया को उसमें नहलाया। लकड़ी की चिड़िया असली चिड़िया बन कर चहकने लगी। उस दिन से हम तीनों भाई झगड़ रहे हैं। हरेक कहता है कि चिड़िया उसकी है। हमारा झगड़ा खुटता ही नहीं है। ए हसीन शहजादी, तू हमारा न्याय कर। बतला कि चिड़िया किसको मिलनी चाहिये। मैं इसीलिए तेरे पास आया हूँ।

लड़की ने चुपचाप अपने मुँह की ओर इशारा किया और सिर हिलाकर बैठ गई।

तब तो उस जवान ने गुस्से में भरकर पाँव पटके और चिल्लाया—अगर तेरी वजह से मुझे मरना पड़ा तो तू भी जीवित नहीं बचेगी। सबसे पहले मैं तेरा ही काम तमाम किये देता हूँ।

यह कहकर उसने तलवार खींचली। लड़की मारे डर के एक कोने में दबक गई और डाढ़ें मार मारकर रोने लगी। उसका मुँह खुलते ही मुँह के अन्दर से एक साँप निकला। साँप फुफकारता हुआ जवान की ओर झपटा। लेकिन जवान ने उसकी ठोड़ी अपनी एड़ी के नीचे कुचलकर साँप का काम तमाम कर दिया।

अब वह शहजादी बोलने लग गई।

युवक को अपनी अँगूठी देकर उसने कहा—ए अजनबी, यह अँगूठी लेकर मेरे पिता खान के पास जा। वह तुझे बहुत-सा इनाम देगा।

युवक ने अँगूठी ले ली और तायर के पास लौट आया। तायर ने अपने दोस्त को आते देखा तो दौड़ कर उससे लिपट गया। युवक ने अपनी अँगुली से अँगूठी निकालकर उसे दी और बोला—अब अपना भेद प्रकट करने का वक्त आगया है। मैं वही सुनहरा मच्छ हूँ, जिसे तुम्हारे पिता ने जाल में फँसाया था लेकिन तुमने दया करके समन्दर में छोड़ दिया था। यह अँगूठी लेकर खान के पास जाओ। वह तुम्हारा इन्तजार कर रहा है। कभी मेरी ज़रूरत पड़े तो नीले समन्दर के किनारे जाकर तीन बार आवाज़ देना। मैं तुम्हारी मदद के लिये आ पहुँचूँगा।

इतना कहकर वह युवक पानी में कूद पड़ा और गायब हो गया।

तायर वहीं किनारे पर खड़ा काफी देर तक समन्दर में टक लगाये अपने दोस्त के गायब होने की जगह देखता रहा। उसके बाद वह खान के पास गया। खान ने धरती तक झुककर तायर को सलाम किया और बोला—ए युवक, तूने मेरी बेटी को चङ्गा किया है। वही मेरी सबसे कीमती दौलत है। मैं तेरे साथ उसका विवाह करूँगा।

खान का इशारा पाकर नौकरों ने तायर को शादी के कपड़े पहिनाये और हीरे जवाहरात के गहनों से उसे मढ़ दिया। दूसरे दिन शादी होगई और तायर खान के महल में रहने चला गया। थोड़े दिन बाद तायर उदास रहने लगा। वह दिन भर समन्दर की ओर ताका करता था। यह देख शहजादी ने उससे इसका कारण पूछा।

तायर ने कहा—इस महल में मेरा दम घुटता है। मैं मज़-दूर का बेटा हूँ। मेरा बदन काम करने का आदि है। मैं गाना तक भूल गया हूँ और मुझे किसी बात में मज़ा नहीं आता है। मेरा बचपन समन्दर के किनारे बीता है। दूध सी सफेद बालू वाली खाड़ी के पास मेरा घर था। वहीं मेरा प्यारा बाप रहता है। मुझे अफ़सोस है कि उसके अन्तिम दिनों में उसे अपने बेटे का वियोग सहना पड़ेगा। अगर तुम मेरे साथ चलने के लिये राज़ी हो जाओ तो मुझे बेहद खुशी होगी। लेकिन वहाँ पहुँचने पर तुम एक शहजादी नहीं रह सकोगी। एक ग़रीब मछुए की बीबी बनकर तुम्हें रहना पड़ेगा। मेरी ही तरह तुम्हें भी ग़रीबी और मुसीबत में अपने दिन गुजारना होंगे।

शहज़ादी ने कहा—तुम्हारी खुशी में मेरी खुशी है। मैं बिलकुल तैयार हूँ। लेकिन हम समन्दर को कैसे पार करेंगे? हमारे देश में न तो जहाज़ होते हैं और न नावें ही।

'तुम इसकी फ़िक्र मत करो। जाओ, चलने के लिए तैयार हो जाओ।'

शहज़ादी तैयारी करने लगी। उधर तायर समन्दर के किनारे पहुँचा और तीन बार नाम लेकर अपने दोस्त को पुकारा। आवाज़ सुनते ही सुनहरा मच्छ किनारे पर आया।

'मैं अपने देश लौटना चाहता हूँ। लेकिन मेरे पास जहाज़ तो दूर नाव भी नहीं है। जिस नाव में मैं यहाँ आया था वह सड़कर मिट्टी में मिल गई है।'

मच्छ ने जवाब दिया—मैं तुम्हारी मदद करूंगा। अन्धेरा हो जाने के बाद किनारे पर एक बड़ी भारी मछली आयेगी। तुम उसे मुँह खोलने के लिये कहना और बिना डरे उसके मुँह में बैठ जाना। सवेरे वह तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा देगी।

'और कहीं मछली हमें निगल गई तो?'

'वह नहीं निगल सकती। उसका गला इतना छोटा है कि वह नींबू भी नहीं निगल सकती है।'

यह कहकर सुनहरा मच्छ गायब होगया।

अन्धेरा होते ही समन्दर का पानी जोरों से हिलने लगा और एक बड़ी भारी मछली किनारे पर आई। उसके नथनों से फव्वारे छूट रहे थे और बेचैनी से वह अपनी दुम फटकार रही थी।

शहज़ादी तो उसे देखकर डर गई। लेकिन तायर ने उसे दिलासा दिया और उठाकर मछली के मुँह के अन्दर ले गया।

मछली तुरन्त तैरने लगी। लहरों के हलकोरों और हिलने-डुलने के कारण तायर और शहजादी की आँख लग गई। सवेरा होने तक वह मछली तायर के घर वाली खाड़ी में पहुँच गई।

तायर ने जागकर अपने देश का किनारा, अपनी टूटी-फूटी झोंपड़ी और झोंपड़ी के आगे मन मारकर बैठे हुए अपने बाप को देखा।

तायर दौड़कर अपने बाप से लिपट गया। अपने बेटे को जीता जागता देखकर बूढ़ा खुशी के मारे रोने लगा।

तायर ने अपने बाप को दिलासा देते हुए कहा—पिताजी, हम लौट आये हैं। मैं और आपकी बहू बिलकुल जवान हैं। हमारे हाथ पाँव मजबूत हैं। अब आप आराम कीजिये। हम काम करेंगे और आपको आराम से रखेंगे।

बूढ़े ने आँसू पोंछकर अपने बेटे को चूम लिया और बहू को आशीर्वाद दिया। और तीनों अमन चैन से उस झोंपड़ी में अपनी जिन्दगी बिताने लगे।

तायर ने अपने साहसपूर्ण कामों के बारे में एक गीत बनाया, जिसे तुर्कमानियाँ के लोग अब भी बड़े चाव से गाते हैं।
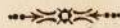
तीन तिलिस्म

बहुत साल हुए, इतने साल कि इस कहानी के सच या मन-गढन्त होने के बारे में कहना असम्भव ही है, किसी गाँव में एक गरीब किसान रहता था। उसके तीन बेटे थे और एक टूटी-फूटी झोंपड़ी। वह इतना गरीब था कि अक्सर उसे और उसके बेटों को भूखा रहना पड़ता था।

एक दिन जब भूखा मरना उसके लिये असम्भव हो गया तो उसने शिकार खेलकर पेट भरने का इरादा किया। अपने पड़ौसी से बन्दूक माँगकर वह जङ्गल में चला गया।

काफी भटकने के बाद वह एक पेड़ के पास पहुँचा। वह बड़ा ही अजीब किस्म का पेड़ था। उसकी पत्तियाँ भी अजीब थीं। पेड़ की टहनी पर एक चिड़िया बैठी थी। वह चिड़िया भी अजीब तरह की मालूम पड़ती थी। किसान ने बिना किसी हीला-हवाले के निशाना ताका और चिड़िया को नीचे गिरा दिया।

लेकिन जैसे ही उसने चिड़िया को उठाया चिड़िया ने अपनी चोंच खोलकर कहा—ए रहम दिल शिकारी, मुझे मारे मत। मैं गाढ़े वक्त में तेरी मदद करूँगी।

इतना कहकर चिड़िया ने अपने डैनों के नीचे से एक घड़ी किया हुआ रुमाल उस किसान को दिया और बोली—जब तुम्हें भूख सताये और खाने को कुछ न हो तो इस रुमाल को हिलाना। पलक मारते ही बढ़िया और स्वादिष्ट भोजन तैयार हो जायगा।

रुमाल पाकर किसान बड़ा खुश हुआ और उसने चिड़िया को छोड़ दिया।

घर पहुँच कर उसने अपने बेटों को वह रुमाल दिखलाया और उसके जादू की परीक्षा की। रुमाल हिलाते ही तरह तरह का बढ़िया भोजन तैयार हो गया। उस दिन से वह और उसका परिवार सुख से जिन्दगी बिताने लगा और उन्हें भर पेट खाना मिलने लगा।

थोड़े दिन बाद उनके इलाके का खान अपने मुसाहिबों सहित उस गाँव में आया। वे लोग पहाड़ों में शिकार खेलकर लौट रहे थे। खान और उसके साथी भूख से इतने व्याकुल हो गये थे कि हर घर में खाने की तलाश करने लगे। गाँव वालों ने उन लोगों को उस गरीब किसान के घर भेज दिया। खान और उसका पूरा लवाजमा ही गरीब किसान के यहाँ आ पहुँचा।

खान के वहाँ पहुँचते ही किसान के बेटे थालियों में बहुत-सा खाना ले आये। खान ने अपनी सारी जिन्दगी में ऐसा बढ़िया और स्वादिष्ट खाना नहीं खाया था। एक ग़रीब किसान के घर बात की बात में इतना अच्छा खाना तैयार होते देख खान को सन्देह हुआ और उसने इस रहस्य का पता लगाने का इरादा कर लिया।

कुछ दिनों बाद खान के नाम फरमान आया कि इस्ताम्बुल से शाही एलची (राजदूत) बादशाह का सन्देशा लेकर आ रहे हैं। खान ने झट उस ग़रीब किसान को हुक्म दिया कि उसे वहाँ आकर शाही एलचियों के खाने-पीने का शाही ढङ्ग से इन्तज़ाम करना होगा।

हुक्म मिलते ही खान के नौकर किसान के पास पहुँचे। उन्होंने उसे घसीटकर खान के पास ले जाने की धमकी दी।

बेचारे किसान के तो हाथ-पाँव ही फूल गये। उसने देखा कि बिना गये तो जान बचेगी नहीं इसलिए उसने अपने बड़े बेटे उस्मान को बुलाया। उसके हाथ में वह तिलिस्माती रुमाल देकर बोला—बेटा, तू इसे लेकर खान के पास चला जा। एलचियों की खातिर करके तुरत लौट आना। इस रुमाल को सँभालकर रखना। खो मत देना।

उस्मान ने खान के पास जाकर कहा—मैं हुजूर का हुक्म बजाने के लिए आया हूँ। मुझे एक अलग कमरा दिया जाय। वहाँ कोई आने न पाये। मैं बिलकुल निराले में एलचियों के लिए भोजन तैयार करूँगा।

खान ने उसकी बात मँजूर कर ली। नौकरों ने उस्मान को एक बड़ा-सा कमरा रहने और काम करने के लिए दे दिया।

एलचियों के आने से आधा घण्टा पहले खान उस्मान के कमरे में यह देखने के लिए गया कि खाना तैयार हो गया है या नहीं। वहाँ पहुँचकर जब उसने उस्मान को मसनद पर लेटे हुए और बर्तनों को खाली देखा तो उसके गुस्से का ठिकाना न रहा।

वह कड़क कर बोला—ओ पाजी, तूने अभी तक कुछ नहीं पकाया ! इस हुक्म-उदूली के लिए मैं तुझे मीनार से गिरा कर मौत की सजा दूँगा ताकि सब लोग खान की हुक्म उदूली करने का मतलब समझ लें।

लेकिन उस्मान ने शान्ति से कहा—मेहरबान आक़ा, आपको परेशान होने की ज़रूरत नहीं। वक्त पर सब चीज़ें तैयार हो जाएँगी। मुझे दावत की जगह ले जाकर छोड़ दीजिये।

और दीवानखाने में जाकर उस्मान ने हर दस्तरखान के ऊपर तिलिस्माती रुमाल हिला दिया। बात की बात में वहाँ बढ़िया और स्वादिष्ट भोजन का ढेर लग गया।

खान को भरोसा हो गया कि हो न हो उस्मान के पास तिलिस्माती रुमाल है और जैसे बने वैसे उसे अपने कब्जे में करने के लिए वह उतावला हो उठा।

शाही एलचियों के जाने के बाद उसने उस्मान से कहा—तुम्हारे जैसा जादूगर और सरदार खान का दामाद होना चाहिये। मैं अपनी इकलौती बेटी का विवाह तुम्हारे साथ करूँगा।

दूसरे दिन धूमधाम से शादी हो गई और ग़रीब किसान का बेटा उस्मान खान का दामाद बन गया। लेकिन उस कुटिल खान ने अपनी बेटी को सिखला दिया था जैसे बने वैसे उस्मान से उसके जादू का पता लगाकर उसपर कब्जा कर ले।

रात में जब उस्मान सोने आया तो खान की बेटी ने भोलेपन से पूछा—ए मेरे देवताओं के दिये हुये पति, खान के महल में तेरा इतना आदर-सम्मान किस लिए है ?

उस्मान को उनके षड़यन्त्र का पता नहीं था इसलिए उसने खान की बेटी को उस तिलिस्माती रुमाल के बारे में सब कुछ बतला दिया।

खान की बेटी ने उससे देखने के लिए वह रुमाल माँगा और रूमाल अपने हाथ में आते ही ज़ोर से ताली बजाई। नङ्गी तलवारें लिये हुए चार खोजे उस्मान पर टूट पड़े। खान की बेटी ने उन्हें हुक्म दिया—ले जाओ, इस कुत्ते को जेल में डाल दो।

खोजे उस्मान को बाँधकर ले गये और उसे काल कोठरी में बन्द कर दिया। और इस तरह उस ग़रीब किसान को अपने तिलिस्माती रुमाल और अपने बड़े बेटे से हाथ धोना पड़ा।

वह किसान और उसके दोनों बेटे फिर भूखों मरने लगे। एक बार फिर अपने पड़ौसी से बन्दूक माँग कर किसान जङ्गल में शिकार करने के लिए गया। काफ़ी भटकने के बाद वह उसी पेड़ के पास पहुँच गया और उसने वही चिड़िया फिर देखी। उसने बन्दूक चलाकर चिड़िया को घायल कर दिया। चिड़िया नीचे आ गिरी और बोली—ए रहमदिल किसान, मेरी जान मत ले। मैं मुसीबत के वक्त तेरे काम आऊँगी। यह बटुवा ले जा। जब रुपयों की जरूरत हो तो इसे हिलाना और इसमें से अशर्फ़ियां गिरने लगेंगी।

बटुवा पाकर किसान को बड़ी खुशी हुई। उसने उसे ले लिया और घर लौट आया। घर आकर उसने अपने बेटों को

बटुवा दिखलाया। एक मेज़ के आगे बैठकर किसान ने बटुवा हिलाया और वहाँ अशर्फ़ियों का ढेर लग गया।

थोड़े ही दिनों में उस किसान ने अपने रहने के लिये नयी झोंपड़ी बनाई। उस तरह की झोंपड़ी सारे इलाके में और किसी की नहीं थी। इलाका तो दूर, ठेठ बख्शी सराय तक उस जैसी शानदार झोंपड़ी अमीर से अमीर किसान की भी नहीं थी। और वह बूढ़ा उस झोंपड़ी में चैन से रहकर मलीदा उड़ाने लगा।

थोड़े दिनों बाद खान शिकार से लौटते हुए उस गाँव में होकर गुजरा। बूढ़े की उस शानदार झोंपड़ी को देखकर उसे शक हुआ कि हो न हो, बूढ़े के पास तिलिस्म है। इसका पता लगाना ही चाहिये।

अपने मुक़ाम पर पहुँचकर उसने बूढ़े के पास हुक्म भेजा कि खान के रहने के लिए नया महल बनाना है। फौरन चल कर नया महल बनाया जाय।

खान के नौकर धम्-धम् करते हुए उसकी झोंपड़ी में घुस आये और उसे घसीटकर ले जाने लगे। बूढ़े के होश हवास गुम हो गये। लेकिन बिना गये कोई चारा नहीं था। वह चाहे या न चाहे उसे खान के लिये नया महल बनाना ही पड़ेगा। पर चूंकि वह बहुत बूढ़ा था इसलिये उसने अपने दूसरे बेटे मुस्तफ़ा को भेज दिया। एक ओर ले जाकर उसने मुस्तफ़ा को बटुवा दिया और हिदायत कर दी कि बटुवे को अच्छी तरह सँभाल कर रखना।

नौकरों ने मुस्तफ़ा को खान की इजलास में पेश किया और खान ने उसे एक शानदार महल बनाने का हुक्म दिया।

जब मुस्तफ़ा ने काम शुरू करने के लिए रुपये माँगे तो खान ने नाराज़ होकर कहा—तेरा बाप ग़रीब होकर भी शानदार मकान बना सकता है। तुझे भी महल बनाना होगा। यदि हुक्म उदूली हुई तो पहाड़ की चोटी से फेंक दिया जायगा।

मुस्तफ़ा को बटुवे की मदद से महल बनाने के लिए राजी होना पड़ा। उसने अपने लिए एक अलग कमरा मांगा, जो उसे दे दिया गया।

दूसरे दिन जब खान उसके कमरे में गया तो हजार अशर्फ़ियों का ढेर टेबल पर लगा हुआ था। खान ने उन चमकती हुई सुनहरी अशर्फ़ियों की खूब तारीफ की और समझ गया कि मुस्तफ़ा के पास तिलिस्म है और जैसे बने वैसे उस तिलिस्म को अपने कब्जे में करने का उसने इरादा कर लिया।

मुस्तफ़ा ने महल बनवाना शुरू कर दिया और पानी की तरह अशर्फ़ियाँ बहाने लगा।

जब महल बनकर तैयार होगया तो खान ने उससे कहा—तुम्हारे जैसा हुनरदार आदमी ही मेरी इकलौती बेटी का पति हो सकता है। इसके साथ शादी करलो और इस महल में सुख चैन से रहो।

उसी दिन ग़रीब किसान के बेटे मुस्तफ़ा की शादी खान की इकलौती बेटी के साथ धूमधाम से कर दी गई।

शाम को खान की बेटी ने अपने बाप के इशारे पर मुस्तफ़ा से पूछा—ओ मेरे देवताओं के दिये हुए पति, किस वरदान ने तुम्हें इतना धनवान बनाया है। मेरा खयाल है कि तुम्हारे पास कोई तिलिस्माती चीज़ होनी चाहिये। अगर अनुचित न समझें तो अपनी इस दासी को भी वह भेद बतलाकर कृतार्थ कीजिये।

मुस्तफ़ा को षड्यन्त्र का पता नहीं था इसलिए उसने तिलिस्माती बटुवे के सम्बन्ध में सब कुछ खान की लड़की को बतला दिया। जैसे ही अपनी पत्नी को बतलाने के लिए मुस्तफ़ा ने बटुवा निकाला उस कुटिल औरत ने बटुवा उसके हाथ से छीन कर ताली बजाई।

नङ्गी तलवारें लिये हुए चार खोजे मुस्तफ़ा पर टूट पड़े और उसे काल कोठरी में ले जाकर बन्द कर दिया। मुस्तफ़ा भी अपने भाई उस्मान के साथ सात तालों के भीतर बन्द हो गया।

बेचारे ग़रीब किसान को रुमाल और बटुवे के साथ-साथ अपने दोनों बेटों से भी हाथ धोना पड़ा। एक बार फिर वह और उसका तीसरा बेटा ताज़ भूखों मरने लगे। भूख ने एक बार फिर उसे शिकार पर जाने के लिये मजबूर कर दिया। अपने पड़ौसी से एक बार फिर बन्दूक लेकर वह अपने बेटे ताज़ के साथ जङ्गल में शिकार खेलने के लिये गया।

उस दिन वह किसान और उसका बेटा खूब भटके लेकिन एक भी शिकार उनके हाथ न लगा। निराश होकर वे घर की ओर लौटने जा ही रहे थे कि किसान को वह पेड़ दिखाई दिया जहाँ उसने दो बार उस अनोखी चिड़िया को घायल किया था। उसी पेड़ की एक टहनी पर उसी चिड़िया को बैठे देख उनकी खुशी का ठिकाना न रहा।

बूढ़े ने निशाना लगाकर चिड़िया को नीचे गिरा दिया। चिड़िया छटपटाती हुई बोली—ए रहमदिल शिकारी, मुझे मारे मत। मैं तेरी मदद करूँगी।

बूढ़े ने चिड़िया को छोड़ दिया और चिड़िया ने उसे एक सुनहरा धनुष दिया।

चिड़िया बोली—इस धनुष से तीर छोड़ोगे तो वह तुम्हारे दुश्मन को जहाँ भी वह होगा बेध देगा।

यह चीज़ पाकर बूढ़े को कोई खास खुशी नहीं हुई; परन्तु फिर भी उसने उसे रख लिया और घर की ओर लौटा। रास्ते में उन्होंने उस धनुष से खूब शिकार किया। उस दिन उन्हें खूब भर पेट खाने को मिला। तब से वे बाप बेटे उस धनुष से शिकार कर अपना पेट पालने लगे।

एक दिन वह खान फिर शिकार खेलता हुआ बूढ़े के गाँव में आया। उसने सारे गाँव को हाका करने और शिकार में मदद करने के लिए जङ्गल में भेजा। बूढ़े को भी जाना पड़ा। वह अपना धनुष साथ लेता गया। खान ने शिकार के वक्त देखा कि बूढ़े ने जिस जानवर पर निशाना साधा उसी को मार गिराया। खान समझ गया कि हो न हो बूढ़े के पास तिलिस्म होना चाहिये।

थोड़े दिनों बाद खान को काफिरों से लड़ने के लिये जाना पड़ा। उसने सेना की भर्ती शुरू की तो उसे बूढ़े की याद हो आई। खान ने झट उसके पास सवार दौड़ाये।

सवार डाँटते डपटते हुए बूढ़े की झोंपड़ी में आ घुसे और उसे घसीटकर खान के पास ले चले।

बूढ़े किसान ने गुहार की—अरे बाबा, मुझ बूढ़े को क्यों ले जाते हो? ले ही जाना है तो मेरे बेटे ताज़ को ले जाओ।

ताज़ चाहे या न चाहे फिर भी उसे लड़ाई पर जाना ही पड़ा। खान ने उसे अपनी फौज़ में भर्ती कर लिया और वे लोग साथ-साथ ही मोर्चे पर पहुँचे।

लड़ाई शुरू होने से पहले खान ने ताज़ को अपने पास पिछाये में बुला लिया ताकि वह और उसका सुनहरी धनुष

आँखों से ओझल न हो जाय। ताज़ को इस बात का बहुत बुरा लगा और उसने खान से शिकायत भी की—मैं लड़ाई में आपकी मदद करने और आपके दुश्मनों को मार भगाने के लिये फौज़ में भर्ती हुआ हूँ लेकिन आपने मुझे यहाँ पिछाये में तैनात कर दिया जहाँ लड़ना तो दूर, मैं दुश्मन की शकल तक नहीं देख सकता।

आखिर खान को उसे फौज़ के हिरावल में भेजना पड़ा। जब लड़ाई शुरू हुई तो ताज़ का एक भी निशाना खाली नहीं गया और हाकिम की जीत रही।

दूसरे दिन लड़ाई शुरू होने के पहले ताज़ ने सेनापति से कहा—मुझे अकेला ही दुश्मन से लड़ने दीजिये।

सेनापति ने उसे पागल करार दिया लेकिन ताज़ ने खान से जाकर निवेदन किया। खान ने उसे दुश्मन की फौज से अकेला लड़ने की इजाजत दे दी।

दूसरे दिन ताज़ अकेला अपनी फौज़ के आगे खड़ा होगया और उसने दुश्मन की पूरी फौज़ को चुनौती दी। यह देख दुश्मन की फौज़ और खुद उसकी फौज़ भी हँसने लगी। इस पर ताज़ ने नाराज़ होकर तीर छोड़ना शुरू किया। उसके एक-एक तीर ने हजार-हजार आदमियों को मौत के घाट उतार दिया। बात की बात में दुश्मन की फौज़ मारी गई और बचे हुए लोग भाग खड़े हुए। खान की सेना ने उन्हें पकड़कर बन्दी बना लिया।

जब लड़ाई खत्म हुई तो सेनापति ने खान को ताज़ की वीरता का हाल कह सुनाया।

खान ने कहा—वह कोई बड़ा जादूगर मालूम पड़ता है। उसे मेरे आगे पेश करो।

जैसे बने वैसे ताज़ के उस तिलिस्माती धनुष को अपने कब्जे में करने का खान ने पक्का इरादा कर लिया। इसलिये वह बोला—तुम जैसा बहादुर और हुनरदार ही मेरी इकलौती बेटी का पति बन सकता है।

लड़ाई में विजयी होकर खान अपनी सेना और ताज़ सहित अपने शहर लौट आया। विजय और ताज़ की शादी का उत्सव साथ-साथ ही मनाये गये। लेकिन ताज़ ने मिनट भर के लिये धनुष को अपने से अलग नहीं किया। उसे बराबर साथ ही रखे रहा। शाम को खान की बेटी ने अपने बाप का इशारा पाकर ताज़ से मीठे स्वर में पूछा—आप ऐसा कौनसा जादू जानते हैं जिससे अकेले दुश्मन की सारी सेना को नष्ट कर सके? अपनी दासी को भी बतलाइये कि आपके धनुष में ऐसा कौनसा चमत्कार है?

ग़रीब बाप के बेटे ताज़ ने जवाब दिया—चमत्कार-शमत्कार कुछ भी नहीं है। मैं सिर्फ तीर चलाना जानता हूँ और यह मेरा धनुष है।

खान की बेटी ने ज़ोर देकर कहा—ओ मेरे देवताओं के दिये हुए पति, अपनी इस दासी को भी ज़रा अपना वह अनोखा धनुष देखने दीजिये।

ताज़ ने जवाब दिया—हथियारों को छूना औरतों का काम नहीं है। इतना कहकर वह धनुष को सिरहाने रखकर सो गया।

लेकिन खान की बेटी ने उसे शराब के प्याले में बेहोशी की दवा डालकर पिला दी और ऊपर से तेज़ गन्ध का रुमाल सुँघा दिया। ताज़ एकदम ऊँघ गया और खर्राटे लेने लगा। खान की बेटी ने धीरे से धनुष उठाया और दौड़ी जाकर अपने बाप को दे आई।

जब ताज़ की नींद खुली तो वहाँ न तो उसका धनुष था और न बीवी ही। धोखा उसकी समझ में आगया और उसने सोचा कि अब यहाँ से भागने में ही कुशल है।

वह बिस्तरे से उठा और पहरेदारों की आँख बचाकर महल से निकल भागा और पहाड़ों तथा जङ्गलों में जा छिपा। अपने गाँव तक जाने की भी उसकी हिम्मत नहीं हुई।

तिलस्माती रुमाल, बटुवा और धनुष के साथ अपने तीनों बेटों को खोकर वह ग़रीब बूढ़ा ज्यादा दिन नहीं जीया। दुःख और ग़रीबी की मार ने उसे जल्द ही मौत के हवाले कर दिया।

सर्दियों में ताज़ को जङ्गल और पहाड़ों में काफी मुसीबतें उठाना पड़ीं। आखिर उसने वहाँ जाकर किस्मत आजमाना चाहा जहाँ उसके पिता ने तीन बार चिड़िया को घायल करके गिराया था। वह जङ्गलों में उस पेड़ की तलाश में भटकने लगा, जिसकी डाल पर अनोखी चिड़िया बैठा करती थी। आखिर उसे वह पेड़ मिल गया। जाड़े के बावजूद पेड़ की पत्तियाँ हरी थीं। उन अनोखी पत्तियों के बीच अजीब तरह के फल लटक रहे थे, जो मीठे अँजीर की तरह मालूम पड़ते थे। वह पेड़ पर चढ़ गया। उसने कुछ फल तोड़े और उन्हें खागया। फल खाते ही उसके सिर पर बकरे के सींग जैसे दो सींग उग आये।

वह मारे डर के सिर धुनने लगा ताकि सींग गिर पड़ें। लेकिन सींग काफी मजबूती के साथ उगे हुए थे। आखिर निराश होकर वह उस पेड़ के तने से सींग टकराने लगा। उसने सोचा सम्भव है इस तरह करने से सींग टूट जाएँ। जब वह सींग टकरा रहा था तो एक सींग पास की एक लता के पत्ते से लग कर गिर पड़ा। प्रसन्न होकर उसने कुछ पत्तियाँ तोड़ लीं और

उन्हें दूसरे सींग पर भी मसला। मसलते ही वह सींग भी गिर गया।

ताज़ ने सोचा कि यह तो अच्छी करामात हाथ लगी। उसने टोकनी भरकर वे फल इकट्ठे किये और साथ ही कुछ पत्तियाँ भी तोड़ लीं।

फिर फकीर का वेश बनाकर उसने नकली डाढ़ी-मूछें लगाईं और सिर पर टोपी पहनी। उसके बाद फलों की वह डलिया लेकर वह सीधा खान के महल के दरवाजे पर पहुँचा और बोलने लगा—मीठे अँजीर ले लो। ताजे अँजीर ले लो।

जब खान की बेटी ने सुना कि ताज़े अँजीर बिक रहे हैं तो उसने अपने पिता से कुछ अँजीर खरीद लेने के लिए कहा।

खान ने आश्चर्य से कहा—कैसी पागलपन की बात करती है? सर्दियों में ताजे अँजीर कहाँ मिलेंगे? लेकिन जब दुबारा आवाज़ आई तो खुद उसने उठकर खिड़की में से झाँका और एक बूढ़े भिखारी को ताजे अँजीर लिये हुए देखा।

खान ने उससे पूरी टोकरी ही खरीद ली और ताज़ अँजीर बेचकर झट गायब होगया।

खान की बेटी ने खान और उसके सब मुसाहिबों को अँजीर बाँटे और खुद भी चार अँजीर खाये। सबके हिस्से चार-चार अँजीर पड़े थे और अँजीर खाते ही सबके सिरों पर चार-चार सींग उग आये।

अब तो खान के महल में कुहराम मच गया। सबके सिर पर सींग ही सींग दिखने लगे। खान ने देश-विदेश के कई डाक्टरों को बुलाया लेकिन कोई उन सींगों को मिटा नहीं सका। आखिर खान ने ढिंढोरा पिटवाया कि जो उनके सींगों को

गिरा देगा उसके साथ शाहजादी की शादी करके उसे राजपाट दिया जायगा।

ताज़ ने भी यह घोषणा सुनी और महल में जा पहुँचा।

उसने एक पत्ती लेकर खान के सींग पर लगाई और बात की बात में सींग गिर गया। खान को आश्चर्य के साथ खुशी भी हुई लेकिन ताज़ ने उससे कहा—ए शहनशाह, मैं तुम्हारे सबके सींगों को गिरा सकता हूँ। लेकिन मेरी एक शर्त है। मुझे तुम्हारा राजपाट नहीं चाहिये। बोलो मेरी शर्त पूरी करोगे?

खान ने वादा किया—तुम जो माँगोगे दिया जायगा।

ताज़ ने कहा—तो झट से मुझे मेरा सुनहरा धनुष लौटा दो। यह कहकर उसने दाढ़ी-मूछें निकाल लीं और टोपी भी उतार दी।

खान ने उसे पहचाना तो मारे गुस्से के आग-बबूला हो गया। लेकिन अब वह कर ही क्या सकता था? मजबूर होकर उसे ताज़ की शर्त पूरी करना पड़ी। सुनहरा धनुष ताज़ के हवाले किया गया।

धनुष लेकर ताज़ बोला—अब झट से मेरा तिलिस्माती बटुवा और रुमाल और मेरे भाइयों को मेरे हवाले करो। देर मत करो, नहीं तो मेरे तीर से बच नहीं सकोगे।

इतना कहकर उसने खान और उसके मुसाहिबों की ओर तीर से निशाना ताका। सब डरकर उसके पाँवों पर गिर पड़े और खान की बेटी दौड़ी गई और दोनों तिलिस्माती चीज़ें ले आई।

उन तिलिस्मों को लेकर ताज़ वहाँ गया जहाँ उसके दोनों भाई सात तालों में बन्द थे। धनुष पर तीर रखकर उसने ऐसा

मारा कि सातों ताले गूलर के पके हुए फल की तरह जमीन पर आ गिरे। उसने जेलखाने के दरवाजे खोल दिये और खान के सब कैदी बाहर निकल आये। ताज़ ने खुद हाथ पकड़कर अपने दोनों भाइयों को काल-कोठरियों में से बाहर निकाला फिर वह उनसे बोला—प्यारे भाइयो, ये लो अपने तिलिस्म और महल में चलकर मेरे वज़ीर बनो।

और वह खुद सिंहासन पर बैठकर हुकूमत करने लगा। और खान और उसकी बेटी और खान के सब मुसाहिब अपने सींगों को हिलाते, बकरों की तरह मिमियाते महल की बारह-दरियों में दौड़ने लगे।